INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RSSB

LDC

लिपिक ग्रेड – II एवं कनिष्ठ सहायक

भाग – 3

भारत एवं राजस्थान का भूगोल + अर्थव्यवस्था + पंचायती राज

प्रस्तावना

प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स **"RSSB LDC (लिपिक ग्रेड-II एवं कनिष्ठ सहायक)"** को एक विभिन्न अपने - अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है। ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड (RSSB)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"LDC (लिपिक ग्रेड-II एवं कनिष्ठ सहायक)"** में पूर्ण संभव मदद करेंगे।

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स मे कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है। अतः आप सूची पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : https://www.infusionnotes.com

WhatsApp - https://wa.link/lrn74q

Online Order - http://surl.li/rbhbb

मूल्य : (₹)

संस्करण : नवीनतम

	भारत का भूगोल	
क्र.सं.	अध्याय	पेज
1.	सामान्य परिचय	1
2.	भारत की स्थिति एवं विस्तार	2
3.	प्रमुख स्थलाकृतियाँ	8
4.	मानसून तंत्र एवं वर्षा का वितरण	26
5.	प्रमुख नदियाँ एवं झीलें	39
6.	मृदा	51
7.	वन एवं वनस्पति	54
8.	प्रमुख फसलें	61
9.	प्रमुख खनिज	69
10.	उर्जा संसाधन	74
11.	पर्यावरणीय एवं पारिस्थितिकीय मुद्दे एवं जैव विविधता संरक्षण	80
12.	उद्योग	95

	राजस्थान का भूगोल	
1.	सामान्य परिचय	105
2.	प्रमुख भू-आकृतिक प्रदेश एवं उनकी विशेषताएं	124
3.	जलवायु की विशेषताएं	135
4.	प्रमुख नदियाँ एवं झीलें	147
5.	प्राकृतिक वनस्पति	166
6.	मृदा	176
7.	प्रमुख फसलें (कृषि एवं कृषि पर आधारित उद्योग)	181
8.	राजस्थान में पशुपालन	192
9.	प्रमुख उद्योग	200

10.	प्रमुख सिंचाई परियोजनाएं एवं जल संरक्षण तकनीकें	203
11.	जनसंख्या-वृद्धि, घनत्व, साक्षरता, लिंगानुपात एवं प्रमुख जनजातियाँ	213
12.	खनिज-धात्विक एवं अधात्विक	223
13.	उर्जा संसाधन- परंपरागत एवं गैर परंपरागत	235
14.	जैव विविधता एवं इनका संरक्षण	244
15.	पर्यटन स्थल एवं परिपथ	248
16.	मरुस्थल एवं बंजर भूमि विकास के लिए परियोजनाएं	263
17.	राजस्थान में हस्त उद्योग	264
18.	विभिन्न आर्थिक योजनाएं, कार्यक्रम एवं विकास की संस्थाएं एवं इनमें पंचायती राज का योगदान	273

भारत का भूगोल

अध्याय – I

सामान्य परिचय

- **अर्थ एवं परिभाषा :-** "ज्योग्राफी" (Geography) अंग्रेजी भाषा का शब्द है, जो ग्रीक (यूनानी) भाषा में **'ज्योग्राफिया'** (Geographia) शब्दावली से प्रेरित है । इसका शाब्दिक अर्थ 'पृथ्वी' का वर्णन करना है।"
- ज्योग्राफिया शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग यूनानी विद्वान **'इरैटॉस्थनीज'** (Eratosthenes 276-194 ई. पू.) ने किया था, इसके पश्चात विश्व स्तर पर इस पृथ्वी के विज्ञान विषय को ज्योग्राफी (भूगोल) नाम से जाना जाने लगा।
- यूनानी एवं रोमन अधिकांश विज्ञानों ने पृथ्वी को' चपटा' या' तस्तरीनुमा' माना, जबकि भारतीय साहित्य में पृथ्वी एवं अन्य आकाशीय पिण्डों को हमेशा' गोलाकार' मान कर वर्णन किया। इसलिए इस विज्ञान को' भूगोल' के नाम से जाना जाता है ।
- भूगोल'पृथ्वी तल' या भू तल (Earthsurface) का विज्ञान है। इसमें स्थान (Space) व उसके विविध लक्षणों (Variable Characters), वितरणों (Distributions) तथा स्थानिक सम्बंधों (Spatial Relations) का मानवीय संसार (World of man) के रूप में अध्ययन किया जाता है ।
- "पृथ्वी तल" भूगोल की आधारशिला है, जिस पर सभी भौतिक मानवीय घटनाएँ एवं अन्तः क्रियाएँ सम्पन्न होती रही हैं । ये सभी क्रियाएँ समय' एवं' स्थान' के परिवर्तनशील सम्बन्ध में घटित हो रही हैं।
- पृथ्वी तल का भौगोलिक शब्दार्थ बहुत व्यापक है, जिसमें स्थल मण्डल, जल मण्डल, वायुमण्डल, जैव मण्डल, पृथ्वी पर सूर्य तथा चन्द्रमा का प्रभाव एवं पृथ्वी की गतियों का वैज्ञानिक आंकलन किया जाता है ।

  भूगोल में भौतिक एवं मानवीय पहलूओं और उनमें पारस्परिक सम्बंधों का अध्ययन किया जाता है । इसलिए प्रारम्भ से ही भूगोल विषय की दो प्रमुख शाखाएँ उभर कर आयी है।

  (I)भौतिक भूगोल (ii) मानव भूगोल
- कालान्तर में विशिष्टीकरण (वर्ष 1950 के पश्चात) बढ़ने से इन दो शाखाओं की अनेक उप शाखाएँ विकसित होती गयी, जिससे विषय सामग्री एवं विषय क्षेत्र में समृद्धि आती गई ।
- भूगोल की प्रमुख शाखाएँ एवं उप शाखाएँ निम्नलिखित हैं-

भौतिक भूगोल	**मानव भूगोल**
1. भू गणित	1. आर्थिक भूगोल
2. भू भौतिकी	2. कृषि भूगोल
3. खगोलीय भूगोल	3. संसाधन भूगोल
4. भू आकृति विज्ञान	4. औद्योगिक भूगोल
5. जलवायु विज्ञान	5. परिवहन भूगोल
6.समुद्र विज्ञान	6. जनसंख्या भूगोल
7.जल विज्ञान	7. अधिवास भूगोल (i) नगरीय भूगोल (ii) ग्रामीण भूगोल
8.हिमनद विज्ञान	8. राजनीतिक भूगोल
9.मृदा विज्ञान	9. सैन्य भूगोल
10. जैव विज्ञान	10. ऐतिहासिक भूगोल
11. चिकित्सा भूगोल	11. सामाजिक भूगोल
12. पारिस्थितिकी / पर्यावरण भूगोल	12.सांस्कृतिक भूगोल
13. मानचित्र कला	13. प्रादेशिक नियोजन
	14. दूरस्थ संवेदन व जी.आई.एस.

अभ्यासार्थ प्रश्न

1. भूगोल की जिस शाखा में तापमान, वायुदाब, पवनों की दिशा एवम् गति,आर्द्रता, वायुराशियाँ, विक्षोभ आदि के विषय में अध्ययन किया जाता है, वह है-

(अ) खगोलीय भूगोल
(ब) मृदा भूगोल
(स) समुद्र विज्ञान
(द) जलवायु विज्ञान **(द)**

2. भूगोल की दो प्रमुख शाखाएँ हैं

(अ) कृषि भूगोल एवं आर्थिक भूगोल
(ब) भौतिक भूगोल एवं मानव भूगोल
(स) पादप भूगोल एवं जीव भूगोल
(द) मौसम भूगोल एवं जलवायु भूगोल **(ब)**

3. किस भूगोलवेत्ता ने भूगोल (Geography) शब्दावली का सर्वप्रथम उपयोग किया ?

(अ) इरेटॉस्थेनीज
(ब) हेरेडोड्स
(स) स्ट्रैबो
(द) टॉलमी **(अ)**

4. पृथ्वी की आयु मानी जाती है

(अ) 4.8 अरब वर्ष
(ब) 5.0 अरब वर्ष
(स) 4.6 अरब वर्ष
(द) 3.9 अरब वर्ष **(स)**

अध्याय – 2
भारत की स्थिति व विस्तार

- आर्यों की भरत नाम की शाखा अथवा महामानव भारत के नाम पर हमारे देश का नामकरण भारत हुआ ।
- प्राचीन काल में आर्यों की भूमि के कारण यह आर्यावर्त के नाम से जाना जाता था ।
- ईरानियों ने सिन्धु नदी के तटीय निवासियों को हिन्दू एवं इस भू - भाग को हिन्दूस्तान का नाम दिया ।
- रोम निवासियों ने सिन्धु नदी को इण्डस तथा यूनानियों ने इण्डोस व इस देश को इण्डिया कहा । यही देश विश्व में आज भारत के नाम से विख्यात है ।
- भारत एशिया महाद्वीप का एक देश है, जो एशिया के दक्षिणी भाग में स्थित है तथा तीन ओर समुद्रों से घिरा हुआ है। पूरा भारत उत्तरी गोलार्द्ध में पड़ता है।
- भारत का अक्षांशीय विस्तार 8°4' उत्तरी अक्षांश से 37°6' उत्तरी अक्षांश तक है।
- भारत का देशान्तर विस्तार 68°7' पूर्वी देशान्तर से 97°25' पूर्वी देशान्तर तक है।
- भारत का क्षेत्रफल 32,87,263 वर्ग किमी. (1269219.34 वर्ग मील) है।

कर्क रेखा अर्थात् 23½ उत्तरी अक्षांश हमारे देश के लगभग मध्य से गुजरती है यह रेखा भारत को दो भागों में विभक्त करती है

(1) उत्तरी भारत, जो शीतोष्ण कटिबन्ध में फैला है तथा
(2) दक्षिणी भारत, जिसका विस्तार उष्ण कटिबन्ध है।

- भारत सम्पूर्ण विश्व का लगभग 1/46 वाँ भाग है।
- क्षेत्रफल के अनुसार रूस, कनाडा, चीन, संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्राज़ील व ऑस्ट्रेलिया के बाद भारत का विश्व में 7वाँ स्थान है।
- यह रूस के क्षेत्रफल का लगभग 1/5, संयुक्त राज्य अमेरिका के क्षेत्रफल का 1/3 तथा ऑस्ट्रेलिया के क्षेत्रफल का 2/5 है ।

> कर्क रेखा भारत के आठ राज्यों क्रमशः गुजरात, राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, प. बंगाल, त्रिपुरा व मिजोरम है।
>
> **NOTE-** राजस्थान की राजधानी जयपुर, त्रिपुरा की राजधानी अगरतला व मिजोरम की राजधानी आइजोल कर्क रेखा के उत्तर में तथा शेष राज्यों की राजधानियाँ दक्षिण में स्थित है।
>
> मणिपुर कर्क रेखा के सर्वाधिक उत्तर में स्थित है।
>
> **प्रश्नः- निम्न में से कौन सा भारत का राज्य कर्क रेखा के उत्तर में स्थित है?**
>
> (1) त्रिपुरा **(2) मणिपुर**
> (3) मिजोरम (4) झारखण्ड उत्तर :- (2)
>
> **NOTE-** कर्क रेखा राजस्थान से न्यूनतम व मध्यप्रदेश से सर्वाधिक गुजरती है।

- भारत का आकार जापान से नौं गुना तथा इंग्लैण्ड से 14 गुना बड़ा है ।
- जनसंख्या की दृष्टि से संसार में भारत का चीन के बाद दूसरा स्थान है।
- विश्व का 2.4% भूमि भारत के पास है जबकि विश्व की लगभग 17.5% (वर्ष 2011 के अनुसार) जनसंख्या भारत में रहती है।
- भारत के उत्तर में नेपाल, भूटान व चीन, दक्षिण में श्रीलंका एवं हिन्द महासागर, पूर्व में बांग्लादेश, म्यांमार एवं बंगाल की खाड़ी तथा पश्चिम में पाकिस्तान एवं अरब सागर है।
- भारत को श्रीलंका से अलग करने वाला समुद्री क्षेत्र मन्नार की खाड़ी (Gulf of Mannar) तथा पाक जलडमरूमध्य (Palk Strait) है।
- प्रायद्वीप भारत (मुख्य भूमि) का दक्षिणतम बिन्दु - कन्याकुमारी के पास केप कोमोरिन (तमिलनाडु) है।
- भारत का सुदूर दक्षिणतम बिन्दु - इन्दिरा प्वाइंट (ग्रेट निकोबार में है)।
- भारत का उत्तरी अन्तिम बिन्दु- इंदिरा कॉल (लद्दाख) है ।
- भारत का मानक समय (Indian Standard Time) इलाहाबाद के पास नैंनी से लिया गया है। जिसका देशान्तर 82°30 पूर्वी देशान्तर है। (वर्तमान में मिर्जापुर) यह ग्रीनविच माध्य समय (GMT) से 5 घण्टे 30 मिनट आगे है। यह मानक समय रेखा भारत के 5 राज्यों क्रमशः उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, ओडिशा व आंध्रप्रदेश है।
- कर्क रेखा व मानक रेखा छत्तीसगढ़ राज्य में एक दुसरे को काटती है।
- भारत की लम्बाई उत्तर से दक्षिण तक 3214 किमी. तथा पूर्व से पश्चिमी तक 2933 किमी. है।
- भारत की समुद्री सीमा मुख्य भूमि, लक्षद्वीप और अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह की तटरेखा की कुल लम्बाई 7,516.6 किमी. है जबकि स्थलीय सीमा की लम्बाई 15,200 किमी. है। भारत की मुख्य भूमि की तटरेखा 6,100 किमी. है।

> भारत की तटीय / समुद्री सीमा = तट रेखा की लम्बाई 7516.6 मुख्य भूमि की तटरेखा 6,100 किमी. है।
>
> कुल राज्य = 9 [i. पश्चिमी तट के राज्य- गुजरात (राज्यों में सबसे लंबी तट रेखा), महाराष्ट्र, गोवा (राज्यों में सबसे छोटी तट रेखा), कर्नाटक व केरल ii. पूर्वी तट के राज्य प. बंगाल, ओडिशा, आंध्रप्रदेश, तमिलनाडु]
>
> कुल केंद्र शासित प्रदेश= अंडमान निकोबार (सर्वाधिक), लक्षद्वीप, दमन व दीव तथा (न्यूनतम) पुद्दुचेरी

- भारत के 16 राज्य व 2 केंद्र शासित प्रदेश अंतर्राष्ट्रीय सीमा बनाते है ।

देश की चतुर्दिक सीमा बिन्दु
• दक्षिणतम बिन्दु - इन्दिरा प्वाइंट (ग्रेट निकोबार द्वीप) • उत्तरी बिन्दु- इन्दिरा कॉल (लद्दाख) • पश्चिमी बिन्दु- गोहर माता (गुजरात) • पूर्वी बिन्दु- किबिथु (अरुणाचल प्रदेश) • मुख्य भूमि की दक्षिणी सीमा- कन्याकुमारी के पास केप कोमोरिन (तमिलनाडु)

स्थलीय सीमाओं पर स्थित भारतीय राज्य	
पाकिस्तान (4)	गुजरात, राजस्थान, पंजाब, जम्मू और कश्मीर, लद्दाख
अफगानिस्तान (1)	लद्दाख
चीन (5)	लद्दाख, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश
नेपाल (5)	उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, बिहार, पश्चिम बंगाल, सिक्किम
भूटान (4)	सिक्किम, पश्चिम बंगाल, असम, अरुणाचल प्रदेश
बांग्लादेश (5)	पश्चिम बंगाल, असम, मेघालय, त्रिपुरा, मिजोरम
म्यांमार (4)	अरुणाचल प्रदेश, नागालैण्ड, मणिपुर, मिजोरम

पड़ोसी देशों के मध्य सीमा विस्तार	
भारत - बांग्लादेश सीमा	4096.7 किमी.
भारत-चीन	3488 किमी.
भारत-पाक सीमा	3323 किमी.
भारत - नेपाल सीमा	1751 किमी.
भारत - म्यांमार सीमा	1643 किमी.
भारत - भूटान सीमा	699 किमी.
भारत – अफगानिस्तान	106 किमी. (वर्तमान में POK में स्थित हैं)

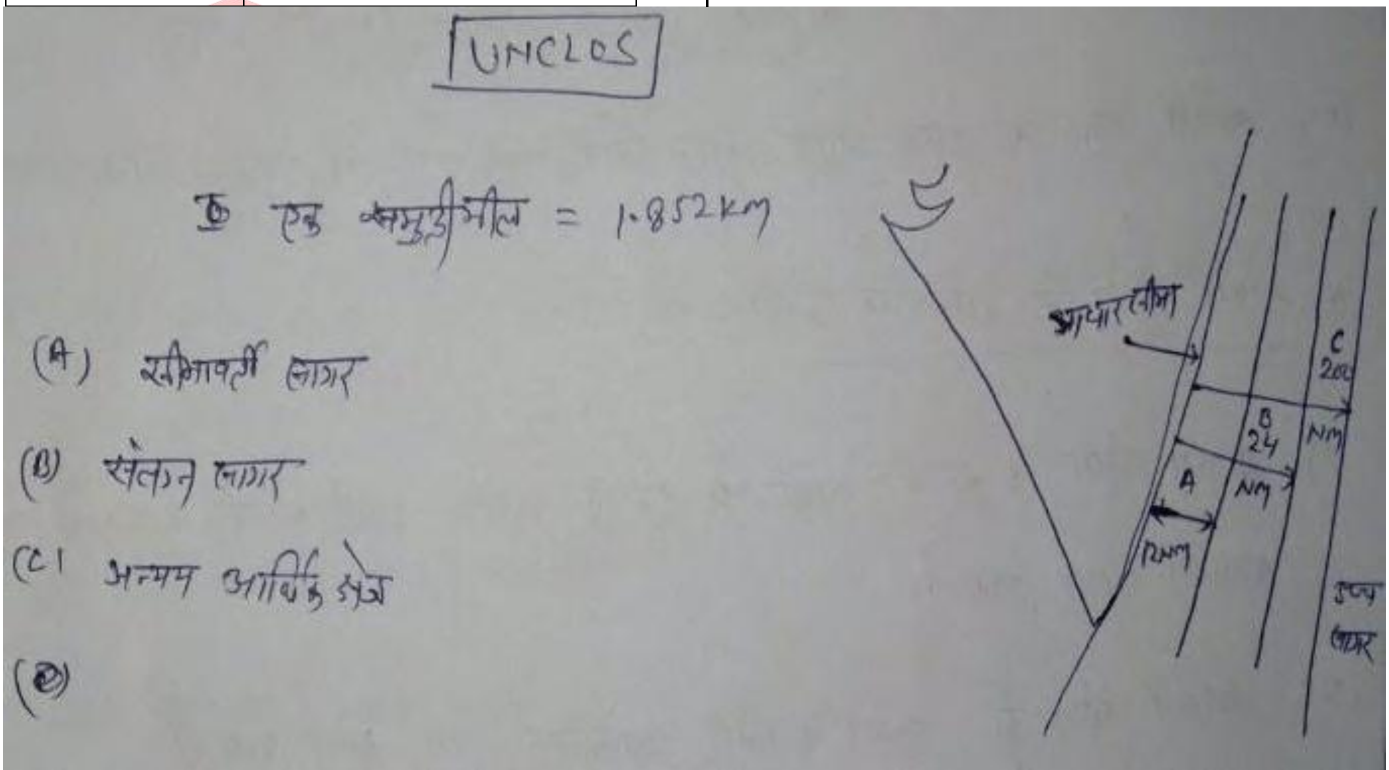

1. **सीमावर्ती सागर :-**
समझौता – UN Convension on low of Ser UNCLOS
एक समुद्रीमील + 1.852 km
(A) सीमावर्ती सागर
(B) संलग्न सागर
(c) अन्यय आर्थिक क्षेत्र

(A) सीमावर्ती सागर : –
- यह क्षेत्र आधार रेखा से 12 NM तक की दूरी तक विस्तृत है।
- इस क्षेत्र में भारत का एकाधिकार है ।

(B) संलग्न सागर :- –
- यह क्षेत्र आधार रेखा से 24 NM की दूरी तक पाया जाता है।
- इस क्षेत्र में भारत को वित्तीय अधिकार प्राप्त हैं, अतः यहाँ भारत सीमा शुल्क आदि ले सकता है ।

- जनसंख्या की दृष्टि से सिक्किम भारत का सबसे छोटा राज्य है।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से अण्डमान-निकोबार द्वीप समूह सबसे बड़ा केन्द्र-शासित प्रदेश है।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से लक्षद्वीप सबसे छोटा केन्द्र -शासित प्रदेश है।
- जनसंख्या की दृष्टि से दिल्ली सबसे बड़ा केन्द्र शासित प्रदेश है।
- जनसंख्या की दृष्टि से लक्षद्वीप सबसे छोटा केन्द्र शासित प्रदेश है।
- उत्तर प्रदेश की सीमा सबसे अधिक राज्यों (8) को छूती है- उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड एवं बिहार।
- भारत में सर्वाधिक नगरों वाला राज्य उत्तर प्रदेश है जबकि मेघालय में सबसे कम नगर हैं।
- भारत में सर्वाधिक नगरीय जनसंख्या वाला राज्य महाराष्ट्र है जबकि सबसे कम नगरीय जनसंख्या सिक्किम में है।

प्रमुख चैनल / जलडमरूमध्य	
विभाजित स्थल खण्ड	**चैनल / खाड़ी / स्ट्रेट**
इन्दिरा प्वाइंट-इण्डोनेशिया	ग्रेट चैनल
लघु अंडमान-निकोबार	10° चैनल
मिनीकॉय-लक्षद्वीप	9° चैनल
मालदीव-मिनीकाय	8° चैनल
भारत-श्रीलंका	पाक जलडमरूमध्य

- ***अभ्यासार्थ प्रश्न***

1. भारत का अक्षांशीय व देशांतरिय विस्तार क्रमशः है-

A. 8°4' उत्तरी अक्षांश से 37°6' उत्तरी आक्षांश तथा 68°7' पूर्वी देशान्तर से 97°25' पश्चिमी देशान्तर तक

B. 8°4' उत्तरी अक्षांश से 37°6' उत्तरी आक्षांश तथा 68°7' पूर्वी देशान्तर से 97°25' पूर्वी देशान्तर तक

C. 8°4' उत्तरी अक्षांश से 37°6' दक्षिणी आक्षांश तथा 68°7' पूर्वी देशान्तर से 97°25' पूर्वी देशान्तर तक

D. 68°7' उत्तरी अक्षांश से 97°25' उत्तरी आक्षांश तथा 8°4' पूर्वी देशान्तर से 37°6' पूर्वी देशान्तर तक

उत्तर :- (B)

2. कर्क रेखा भारत के कितने राज्यों से होकर गुजरती है?

(A) 5 (B) 6
(C) 7 (D) 8 **(D)**

3. भारत के किस राज्य की सीमा नेपाल के साथ सीमा नहीं बनाती है?

(A) पश्चिम बंगाल (B) सिक्किम
(C) बिहार (D) हिमाचल प्रदेश **(D)**

4. प्राचीन भारतीय भौगोलिक मान्यता के अनुसार भारतवर्ष किस द्वीप का अंग था ?

(A) पुष्कर द्वीप (B) जम्बू द्वीप
(C) कांच द्वीप (D) कुश द्वीप **(B)**

5. भारतीय भूभाग का कुल क्षेत्रफल लगभग है-

(A) 32,87,263 वर्ग किमी.
(B) 1269219.34 वर्ग मील
(C) 32,87,263 वर्ग एकड़
(D) A व B दोनों **(D)**

6. भारत और श्रीलंका को अलग करने वाली जलसंधि है-

(A) कुक जलसंधि (B) मलक्का जलसंधि
(C) पाक जलसंधि (D) सुंडा जलसंधि **(C)**

7. किस भारतीय राज्य की सीमा सर्वाधिक राज्यों की सीमा को स्पर्श करती है?

(A) मध्य प्रदेश (B) असम
(C) उत्तर प्रदेश (D) आन्ध्र प्रदेश **(C)**

8. निम्नलिखित प्रमुख भारतीय नगरों में से कौन-सा एक सबसे अधिक पूर्व की ओर अवस्थित है?

(A) हैदराबाद (B) भोपाल
(C) लखनऊ (D) बैंगलुरू **(C)**

9. भारत के किस प्रदेश की सीमाएं तीन देशों क्रमशः नेपाल, भूटान एवं चीन से मिलती हैं?

(A) अरुणाचल प्रदेश (B) मेघालय
(C) पश्चिम बंगाल (D) सिक्किम **(D)**

10. भारत के कितने राज्यों से समुद्र तटरेखा संलग्न है?

(A) 7 (B) 8
(C) 9 (D) 10 **(C)**

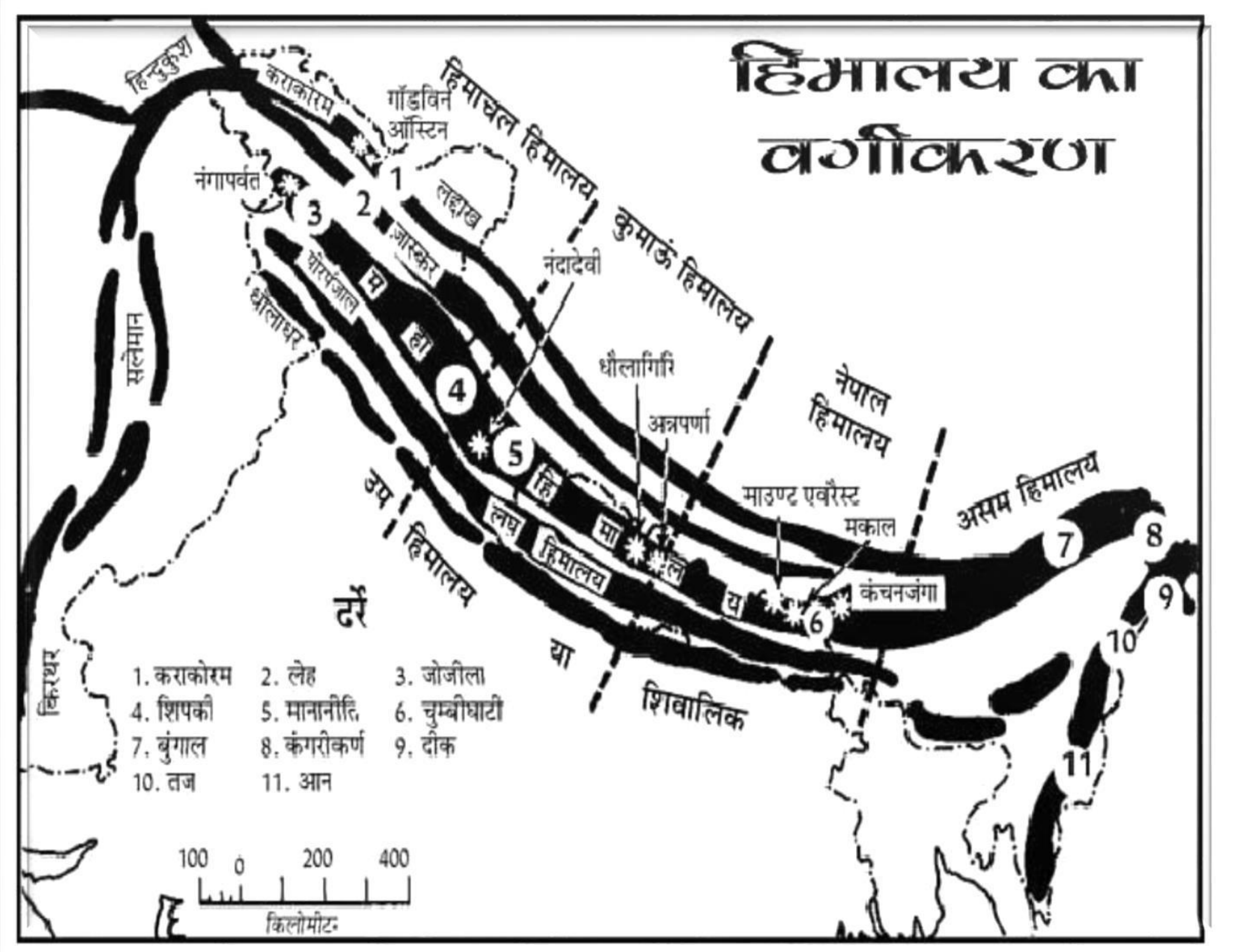

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

ट्रांस हिमालय :- ट्रांस हिमालय का निर्माण हिमालय से भी पहले हो चुका था।

- इसके अन्तर्गत काराकोरम, लद्दाख, कैलाश व जास्कर श्रेणी आती है।
- इन श्रेणियों पर वनस्पति का अभाव पाया जाता है।

(A) काराकोरम श्रेणी –

- यह ट्रांस हिमालय की सबसे उत्तरी श्रेणी है।
- इसकी खोज वर्ष 1906 स्वेन हेडन ने की थी।
- इस श्रेणी को"एशिया की रीढ़" कहा जाता है।
- भारत की सबसे ऊँची चोटी k2 या गाडविन ऑस्टिन (8611मी.) काराकोरम श्रेणी पर ही स्थित है।
- यह विश्व की दूसरी सबसे ऊँची चोटी है ।
- काराकोरम दर्रा एवं इंदिरा कॉल इसी दर्रा में स्थित है।
- काराकोरम दर्रा (विश्व का सबसे ऊँचा दर्रा) काराकोरम श्रृंखला पर स्थित कश्मीर को चीन से जोड़ने वाला संकीर्ण दर्रा है। काराकोरम श्रृंखला पर भारत का सबसे लम्बा ग्लेशियर सियाचिन स्थित है।
- विश्व का सबसे ऊँचा सैनिक अड्डा (सियाचिन) यहीं अवस्थित है। सियाचिन ग्लेशियर से नुब्रा नदी का उद्गम होता है जिसके प्रवाह क्षेत्र में घाटी का निर्माण होता है।
- काराकोरम श्रेणी पर चार प्रमुख ग्लेशियर स्थित हैं।
  - सियाचिन (72 km)
  - बाल्टोरों - (58km)
  - बीयाफो – 63 km
  - हिस्पर (61 Km)

(B) लद्दाख श्रेणी – विश्व की सबसे तीव्र ढलान वाली चोटी राकापोशी (7788मी.) लद्दाख श्रेणी पर ही स्थित है ।

- लद्दाख श्रेणी दक्षिण पूर्व की ओर कैलाश श्रेणी के रूप में स्थित है।
- यह श्रेणी सिन्धु नदी व इसकी सहायक नदी के बीच जल विभाजक का कार्य करती है।
- इस श्रेणी में भारत का सबसे ऊँचा पठार" लद्दाख का पठार" स्थित है इसी पठार पर भू तापीय ऊर्जा के लिए प्रसिद्ध पूंगा घाटी स्थित है ।
- यह भारत का न्यूनतम् वर्षा वाला क्षेत्र द्रास स्थित है ।
- इसका सर्वोच्च शिखर माउंट कैलाश है ।
- इस क्षेत्र में अलवणजल की झीलें जैसे- डल और वुलर तथा लवणजल झीलें जैसे- पैंगोंग सो (गलवान घाटी के नजदीक यह विश्व की सबसे ऊँची खारे पानी की झील है) और सोमुरीरी भी पाई जाती हैं ।

(c) जास्कर श्रेणी -

- यह लद्दाख हिमालय के समांतर दक्षिणी दिशा में स्थित है।
- नंगा पर्वत इस पर्वत श्रेणी की सबसे ऊँची चोटी है।
- लद्दाख व जास्कर श्रेणीयों के बीच से ही सिन्धु नदी बहती है। इस श्रेणी में श्योक नदी प्रवाहित होती है।

उत्तरी हिमालय वृहत् या हिमाद्रि या महान हिमालय –

- ➢ इसका विस्तार नंगा पर्वत से नामचा बरवा पर्वत तक धनुष की आकृति में फैला हुआ है जिसकी कुल लम्बाई 2500 km तक है तथा औसत ऊँचाई 5000- 6000 मी. तक है।
- ➢ उत्तरी हिमालय को भौतिक विभाजन के दृष्टिकोण से दो भागों में बाँटा जा सकता है-

  विश्व की सर्वाधिक ऊँची चोटियाँ इसी श्रेणी पर पाई जाती है जिसमें प्रमुख है-

- माउंट एवरेस्ट (8848 मी.) विश्व की सबसे ऊँची चोटी
- **कंचनजंगा (8598 मी.)**
- **मकालू (8481 मी.)**
- **धौलागिरी (8172 मी.)**
- **अन्नपूर्णा (8076 मी.)**
- **नंदा देवी (7817 मी.)**
- एवरेस्ट को पहले तिब्बत में 'चोमोलुगंमा' के नाम से जाना जाता था जिसका अर्थ 'पर्वतो की रानी'।
- एवरेस्ट, कंचनजंगा, मकालू, धौलागिरि, नंगा पर्वत, नामचा बरवा इसके महत्त्वपूर्ण शिखर है।
- भारत में हिमालय की सर्वोच्च ऊँची चोटी कंचनजंगा यही स्थित हैं। यह विश्व की तीसरी सबसे ऊँची चोटी है।
- कश्मीर हिमालय **करेवा (karewa)** के लिए भी प्रसिद्ध है, जहाँ जाफरान (केसर की किस्म)की खेती की जाती है।
- वृहत हिमालय में जोजीला, पीर पंजाल,बनिहाल, जास्कर श्रेणी में फोटुला और लद्दाख श्रेणी में खारदुन्गला जैसे महत्त्वपूर्ण दर्रे स्थित हैं।
- सिंधु तथा इसकी सहायक नदियाँ, झेलम और चेनाब इस क्षेत्र को प्रवाहित करती हैं। यह हिमालय विलक्षण सौंदर्य और खूबसूरत दृश्य स्थलों के लिए जाना जाता है। हिमालय की यही रोमांचक दृश्यावली पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र है जिसमें प्रमुख तीर्थस्थान- जैसे वैष्णो देवी, अमरनाथ गुफ़ा और चरार - ए - शरीफ इत्यादि है।

<u>लघु या मध्य या हिमाचल हिमालय</u> –महान हिमालय के दक्षिण में तथा शिवालिक के उत्तर में इसका विस्तार है। इसकी सामान्य ऊँचाई 1800- 3000मी. है।

- इसके अन्तर्गत कई श्रेणियाँ पाई जाती हैं।
- पीर पंजाल (जम्मू कश्मीर)
- धौलाधार (हिमाचल प्रदेश)
- नाग टिब्बा (उत्तराखण्ड)
- कुमायूँ (उत्तराखण्ड)
- महाभारत (नेपाल)
- लघु हिमालय तथा महान हिमालय के बीच कई घाटियों का निर्माण हुआ है।
- कश्मीर की घाटी (जम्मू कश्मीर)
- कुल्लू - काँगड़ा घाटी (हिमाचल प्रदेश)
- **काठमांडू** घाटी (नेपाल)
- लघु हिमालय अपने स्वास्थ्यवर्धक पर्यटन स्थलों के लिए भी प्रसिद्ध है जिसके अन्तर्गत शामिल हैं – कुल्लू, मनाली, डलहौजी, धर्मशाला, शिमला (हिमाचल प्रदेश), अल्मोड़ा, मसूरी, चमोली (उत्तराखण्ड)
- लघु हिमालय की श्रेणीयों की ढालों पर शीतोष्ण घास के मैदान पाये जाते है जिन्हे जम्मू-कश्मीर में **'मर्ग'** (गुलमर्ग, सोनमर्ग) व उत्तराखण्ड में **'बुग्याल व पयार'** कहा जाता है।

- **<u>उप हिमालय शिवालिक या बाह्य हिमालय :-</u>**
- मध्य हिमालय के दक्षिण में शिवालिक हिमालय की अवस्थिति को बाह्य हिमालय के नाम से जानते है। यह लघु हिमालय के दक्षिण में स्थित है।
- शिवालिक और लघु हिमालय के बीच स्थित घाटियों को पश्चिम में दून (जैसे- देहरादून, कोटलीदून, पाटलीदून) व पूर्व में द्वार (जैसे- हरिद्वार) कहते हैं।
- शिवालिक को जम्मू कश्मीर में कश्मीर पहाड़ियाँ तथा अरुणाचल प्रदेश में डाफला, मिरी, अबोर व मिश्मी की पहाड़ियो के नाम से जाना जाता है।

चोस- (Chos)- शिवालिक हिमालय में चलने वाली मानसूनी धाराएँ चोस कहलाती है।

<u>करेवा</u>- पीरपंजाल श्रेणी के निर्माण के समय कश्मीर घाटी में कुछ अस्थायी झीलों का निर्माण हुआ जो नदियों के द्वारा लेकर आए अवसाद के कारण ये झीलें अवसाद से भर गई। ऐसे उपजाऊ क्षेत्रों में जाफरान / केसर की खेती की जाती है, जिन्हें करेवा कहा जाता है।

<u>ऋतु प्रवास</u>- जम्मू और कश्मीर में रहने वाली जनजातियों गुज्जर, बकरवाल, झुकिया, भूटिया इत्यादि मध्य हिमालय में बर्फ के पिछलने के उपरान्त निर्मित होने वाले घास के मैदानों में अपने पशुओं को चराने के लिए प्रवास करते हैं तथा ये पुनः सर्दियों के दिनों में मैदानी भागों में आ जाते हैं जिसे ऋतु प्रवास कहा जाता है।

<u>पूर्वांचल की पहाड़ियाँ</u>

पूर्वांचल की पहाड़ियाँ हिमालय का ही विस्तार है

नामचा बरवा के निकट हिमालय अक्षसंघीय मोड़ के कारण दक्षिण की ओर मुड़ जाता है। पटकाईबुम, नागा, मणिपुर, लुशाई, या मिजो पहाड़ी आदि हिमालय का विस्तार बन जाता है यह पहाड़ियाँ भारत एवं म्यांमार सीमा पर स्थित है।

पूर्वांचल की पहाड़ियाँ काफी कटी - फटी हैं।

- पूर्वांचल की पहाड़ियाँ भारतीय मानसून को दिशा प्रदान करती हैं। इस तरह यह पहाड़ियाँ जल विभाजक के साथ - साथ जलवायु विभाजक हैं ।

अरुणाचल प्रदेश	डाफला, मिरी, अबोर व मिश्मी (शिवालिक हिमालय) पटकाई बूम (महान हिमालय)
नागालैण्ड	नागा पहाड़ी की सर्वोच्च चोटी माउंट सरमाटी (3826 मीटर) है। इस पर नागालैण्ड की राजधानी कोहिमा (भारत के किसी राज्य की सबसे पूर्वोत्तर राजधानी) स्थित है।
मणिपुर	मणिपुर की पहाड़ी या लैमाटोल पहाड़ी इस पर लोकटक झील स्थित है। इस झील में भारत का एकमात्र तैरता हुआ राष्ट्रीय उद्यान कैबुल लामजाओ स्थित है।
मिजोरम	मिजो पहाड़ी की सर्वोच्च चोटी ब्लू माउंटेन है।
मेघालय	गारों, खांसी व जयंतिया पहाड़ियाँ (प्रायद्वीपीय पठारी भाग का हिस्सा) गारो खासी एवं जयंतिया पहाड़ी शिलांग के पठार पर अवस्थित हैं।
असम	मिकिर, रेंगमा व बरेल पहाडिया NOTE- बरेल पहाड़ी प्रायद्वीपीय भारत को महान हिमालय से अलग करती है।

हिमालय का प्रादेशिक विभाजन- सिडनी बुर्राड ने हिमालय का प्रादेशिक विभाजन (नदियों के आधार पर) किया तथा हिमालय को 4 प्रादेशिक भागों में बाँटा ।

हिमालय	लम्बाई (किमी.)	नदियाँ	विस्तार
पंजाब हिमालय	560	सिन्धु - सतलुज	जम्मू-कश्मीर, लद्दाख व हिमाचल प्रदेश
कुमायूँ हिमालय	320	सतलुज-काली	उत्तराखंड
नेपाल हिमालय	800	काली-तिस्ता	नेपाल, सिक्किम व प. बंगाल
असम हिमालय	750	तिस्ता-ब्रह्मपुत्र	सिक्किम, प. बंगाल, असम, अरुणाचल प्रदेश, भूटान व चीन

<u>हिमालय के प्रमुख दर्रे</u>

1. **<u>पश्चिमी हिमालय के दर्रे : -</u>**

काराकोरमः - यह काराकोरम श्रेणी मे अवस्थित है, जो उत्तर में स्थित है इसकी ऊँचाई 5000 मी. है और भारत के लद्दाख को चीन के शिंजियांग प्रान्त से मिलाता है।

जम्मू - कश्मीर के दर्रे-

बनिहाल दर्रा -जम्मू से श्रीनगर जाने का नवीन मार्ग प्रदान करता है। इस दर्रे में भारत की सबसे लम्बी सुरंग चेनारी नासिरी सुरंग (9.2 किमी. वर्तमान में नया नाम श्यामा प्रसाद मुखर्जी) व जवाहर सुरंग (2531मी.) स्थित है ।

पीरपंजाल दर्रा- जम्मू से श्रीनगर

जोजिला दर्रा- श्रीनगर से कारगिल

लद्दाख के दर्रे-

फातुला दर्रा- कारगिल से लेह

खारदुन्गला दर्रा- लेह से नुब्रा घाटी यह विश्व का सबसे ऊंचा मोटर वाहन चलाने योग्य दर्रा था (18380 फीट) लेकिन वर्तमान में विश्व का सबसे ऊँचा मोटरसाहन चलाने योग्य दर्रा उमलिंगा दर्रा (19300 फीट) है ।

❖ तटवर्ती मैदान

- भारत में तटीय मैदान पश्चिम घाट के पश्चिम तथा पूर्वी घाट के पूर्व में स्थित हैं ।
- यह पश्चिम में अरब सागर से लेकर पूर्व में बंगाल की खाड़ी तक विस्तृत है ।
- भारत के तटीय मैदान लगभग 6000 किमी. की दूरी में स्थित हैं इनका निर्माण नदियों के द्वारा किया गया हैं ।
- पूर्वी तटीय मैदान पश्चिमी तटीय मैदान की अपेक्षा अधिक चौड़ा होता हैं ।
- पूर्वी घाट का अधिक चौड़ा होने का कारण नदियों के द्वारा डेल्टा का निर्माण करना हैं ।
- अरब सागर में गिरने वाली नदियाँ ज्वारनदमुख का निर्माण करती हैं ।
- मालाबार तट पर लैगून झील पाए जाते है जिन्हें **कयाल** कहते हैं ।
- पूर्वी तटीय मैदान कृषि की दृष्टि से अधिक विकसित हैं ।

तटीय मैदान को 2 भागों में विभाजित किया जा सकता है।

1. पश्चिमी तटीय मैदान
2. पूर्वी तटीय मैदान

1. पश्चिमी तटीय मैदान में शामिल मैदान-

a) गुजरात का तटीय मैदान
b) कोंकण का तटीय मैदान
c) कर्नाटक का तटीय मैदान
d) मालाबार का तटीय मैदान
e) **2. पूर्वी तटीय मैदान में शामिल मैदान-**
a) उत्कल (ओड़िशा) का तटीय मैदान
b) आंध्र का तटीय मैदान
c) तमिलनाडु का तटीय मैदान

1. पश्चिमी तटीय मैदान –

- यह मैदान पश्चिमी घाट के पश्चिम में स्थित हैं जो कि कच्छ प्रायद्वीप से लेकर कन्याकुमारी तक अवस्थित हैं।
- इस मैदान का निर्माण पश्चिम कि ओर बहने वाली नदियों के द्वारा होता हैं जो कि ज्वारनदमुख बनाती हैं।
- इस मैदान कि औसत चौड़ाई 64 km. हैं जो कि उत्तर की और 100 km. से दक्षिण कि और 50 km. तक हैं।

प्रादेशिक रूप से पश्चिम घाट को निम्न तटवर्ती मैदानों में बाँटा जा सकता हैं।

1. **कच्छ का मैदान –** यह गुजरात राज्य में स्थित हैं। इस क्षेत्र में समुन्द्रों में आने वाले ज्वारों के आंतरिक धरातल में प्रवेश करने के कारण यह लवणीय हो जाते हैं जो कृषि के लिए अनुपयोगी होते हैं ।

2. **काठियावाड़ का मैदान –** मंडाव की पहाड़ियों से निकलने वाली नदियों के द्वारा इस मैदान का निर्माण हुआ हैं, यह मैदान कुछ ही किलोमीटर चौड़ा हैं इसलिए यह कृषि हेतु अनुपयोगी हैं।

3. **गुजरात का मैदान –** यह मैदान साबरमती, माही, नर्मदा और ताप्ती नदी के कारण निर्मित हैं ।
यह मैदान उपजाऊ होने के कारण कृषि हेतु उपयोग में लिया जा सकता हैं।

4. **कोंकण का मैदान–** यह मैदान महाराष्ट्र एवं गोवा में स्थित जो कि सकरा व पथरीला हैं।
यहाँ पर नारियल, काजू जैसी फसलें उगाई जाती हैं।

5. **कन्नड़ का मैदान –** यह मैदान कर्नाटक के तटवर्ती भागों में स्थित हैं। इस क्षेत्र में बढ़ने वाली शरावती नदी पर जोग जलप्रपात अथवा (गरसोप्पा) स्थित हैं ।

6. **मालाबार का मैदान –**

- केरल में स्थित
- इस भाग में एक विशेष प्रकार की भू-आकृति कयाल पश्च्यजल पाई जाती हैं।

क्याल / पश्च्यजल –जब नदी के मुहाने पर समुंद्र की धाराएँ या पवनों द्वारा बालू के अवसादों से निर्मित टीलों के द्वारा स्थानीय जल क्षेत्र समुंद्र से अलग हो जाती है, तो एक विशेष प्रकार के झील का निर्माण होता है, यह भू-आकृति क्याल कहलाती हैं ।

उदाहरण–केरल का पुन्न्माद क्याल प्रसिद्ध है, जिसमें प्रतिवर्ष वल्लकल्ली नौका दौड़ होती हैं ।

लैगून – मालाबार तट पर कुछ लैगून झीलें भी पाई जाती हैं ये झीलें लवणीय होती हैं तथा समुद्रों से संलग्न होती हैं ।
उदारहण – वेम्बनाद, अष्ठामुड़ी, षष्टमकोट्टा

2. पूर्वी तटवर्ती मैदान

- यह मैदान 100 से 150 किलोमीटर चौड़ाई वाले हैं ।
- ये स्वर्ण रेखा नदी से / सुवर्ण रेखा से कन्याकुमारी तक फैला हुआ हैं।
- इसके उत्तरी भाग को उत्तरी सरकार तथा दक्षिणी भाग को कोरोमंडल तट कहा जाता हैं इसके अन्य उपविभाजन भी किए गए हैं–

1. उत्कल का मैदान –

- उत्कल तटीय मैदान उड़ीसा के तटीय क्षेत्र का भाग हैं। यह मैदान गंगा के डेल्टा से लेकर महानदी के डेल्टा तक विस्तृत है ।
- इसी तटीय मैदान में प्रसिद्ध चिल्का झील भी आती हैं। यह झील भारत की सबसे बड़ी झील हैं।
- यह मैदान बैतरनी, महानदी, रुसीकुल्या इत्यादि नदियों के डेल्टा से निर्मित हैं ।

2. आंध्र प्रदेश का मैदान –

- इस मैदान में कृष्णा, गोदावरी, पन्नेरु (पेन्नार) इत्यादि नदियाँ बहती हैं।
- कृष्णा व गोदावरी के मध्य मीठे पानी कि झीलें कोलेरु स्थित हैं ।

अध्याय – 5
प्रमुख नदियाँ एवं झीलें

भारत नदियों का देश हैं। भारत के आर्थिक विकास में नदियों का महत्त्वपूर्ण स्थान हैं । नदियाँ यहाँ आदिकाल से ही मानव की जीविकोपार्जन का साधन रही हैं ।

- भारत में 4000 से भी अधिक छोटी व बड़ी नदियाँ हैं, जिन्हें 23 वृहत् तथा 200 लघु नदी श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता हैं ।
- किसी नदी के रेखीय स्वरूप को प्रवाह रेखा कहते हैं। कई प्रवाह रेखाओं के योग को प्रवाह संजाल (Drainage Network) कहते है ।

अपवाह व अपवाह तंत्र (Drainage and Drainage System)

निश्चित वाहिकाओं (Channels) के माध्यम से हो रहे जल प्रवाह को अपवाह (Drainage) तथा इन वाहिकाओं के जाल को अपवाह तंत्र (Drainage System) कहा जाता हैं ।

जलग्रहण क्षेत्र (Catchment Area)-

एक नदी विशिष्ट क्षेत्र से अपना जल बहाकर लाती है जिसे जलग्रहण क्षेत्र कहते है ।

अपवाह द्रोणी –

एक नदी व उसकी सहायक नदियों द्वारा अपवाहित क्षेत्र को अपवाह क्षेत्र कहते है ।

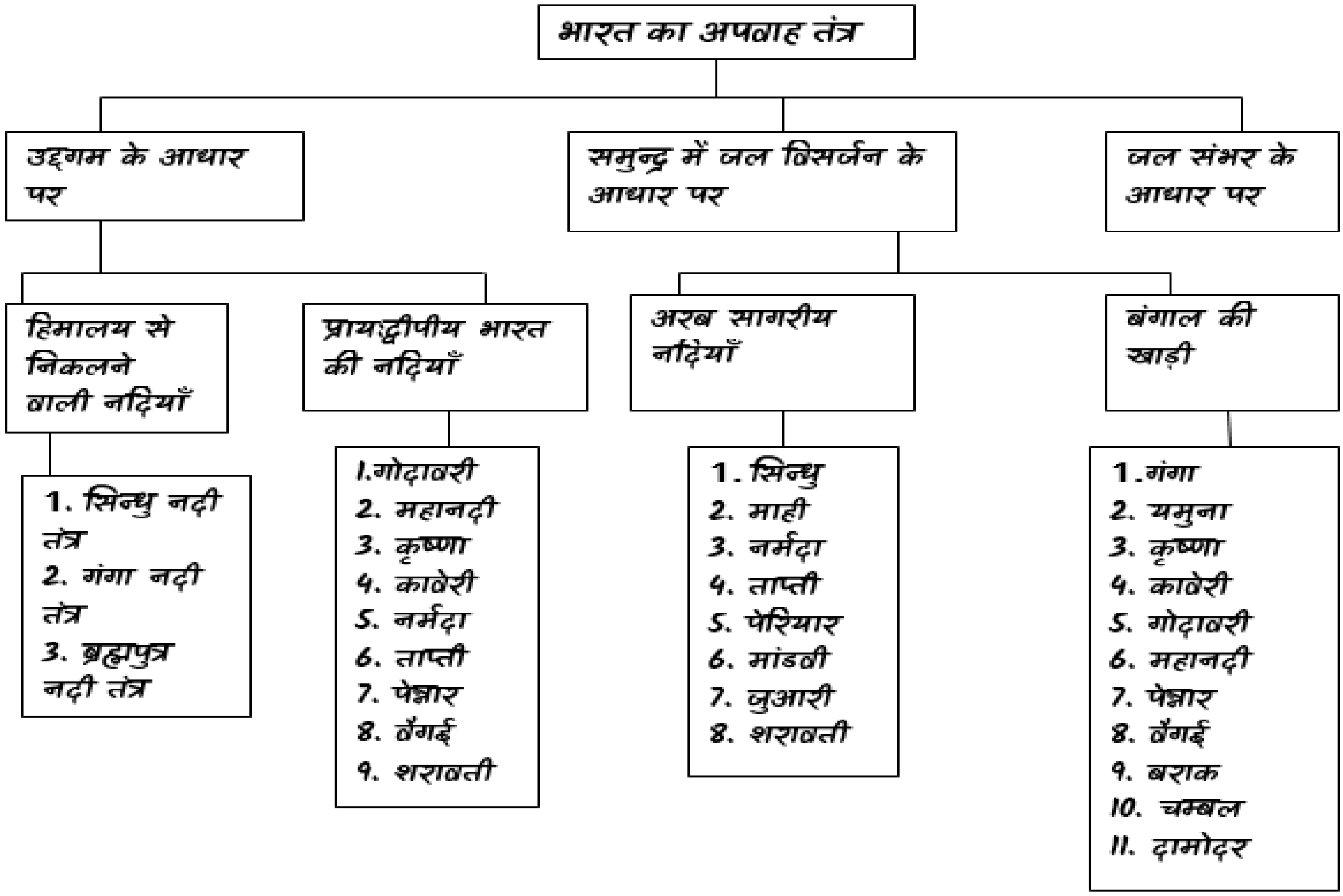

जल संभर क्षेत्र / Wateshad area

जल संभर क्षेत्र के आकार के आधार पर भारतीय अपवाह श्रेणियों को तीन भागों में बाँटा गया हैं

1. प्रमुख नदी श्रेणी: जिनका अपवाह क्षेत्र 20000 वर्ग किलोमीटर से अधिक हैं । इसमें 14 नदियाँ श्रेणियाँ शामिल हैं । जैसे - गंगा, ब्रह्मपुत्र, कृष्णा, तापी, नर्मदा, माही, पेन्नार, साबरमती, बराक आदि ।

2. मध्यम नदी श्रेणी: जिनका अपवाह क्षेत्र 2000 से 20,000 वर्ग किलोमीटर के बीच हैं । इसमें 44 नदी श्रेणिया हैं, जैसे - कालिंदी, पेरियार, मेघना आदि ।

3. लघु नदी श्रेणी: जिनका अपवाह क्षेत्र 2000 वर्ग किलोमीटर से कम हैं । इसमें न्यून वर्षा के क्षेत्रों मे बहने वाली बहुत सी नदियाँ शामिल हैं ।

अपवाह प्रवृत्ति

1. **पूर्ववर्ती अथवा प्रत्यानुवर्ती अपवाह** – वे नदियाँ, जो हिमालय पर्वत के निर्माण के पूर्व प्रवाहित होती थी तथा हिमालय के निर्माण के पश्चात् महाखण्ड़ बनाकर अपने पूर्व मार्ग से प्रवाहित होती हैं। जैसे गंगा, ब्रह्मपुत्र, सतलुज, सिन्धु।
2. **अनुवर्ती नदियाँ** – वे नदियाँ, जो सामान्य ढाल की दिशा में बहती हैं। प्रायद्वीपीय भारत की अधिकतर नदियाँ अनुवर्ती नदियाँ है।
3. **परवर्ती नदियॉं** – चम्बल, सिंध, बेतवा, सोन आदि नदियाँ गंगा और यमुना में जाकर समकोण पर मिलती हैं । गंगा अपवाह तंत्र के परवर्ती अपवाह का उदाहरण हैं ।

इंडो ब्रह्म नदी:- भू-वैज्ञानिक मानते है, कि **मायोसीन** कल्प में लगभग 2.5 करोड़ से 50 लाखों वर्ष पहले एक विशाल नदी थी। जिसे शिवालिक या इंडो - ब्रह्म नदी कहा गया हैं।

इंडो ब्रह्म नदी के तीन मुख्य अपवाह तंत्र –

1. पश्चिम में सिन्धु और इसकी पाँच सहायक नदियाँ
2. मध्य में गंगा और हिमालय से निकलने वाली इसकी सहायक नदियाँ
3. पूर्व में ब्रह्मपुत्र का भाग व हिमालय से निकलने वाली इसकी सहायक नदियाँ

सिन्धु नदी तंत्र

यह विश्व की सबसे बड़ी नदी श्रेणियों में से एक हैं, जिसका क्षेत्रफल 11 लाख, 65 हजार वर्ग km हैं । भारत में इसका क्षेत्रफल 3,21,289 वर्ग किमी हैं ।

- सिन्धु नदी की कुल लंबाई 2,880 किमी. है। परंतु भारत में इसकी लम्बाई केवल 1,114 km हैं । भारत में यह हिमालय की नदियों में सबसे पश्चिमी नदी हैं।
- सिन्धु नदी का उद्गगम तिब्बती क्षेत्र में स्थित कैलाश पर्वत श्रेणी (मानसरोवर झील) में बोखर-चू के निकट एक ग्लेशियर (हिमनद) से होता है । तिब्बत में इसे शेर मुख अथवा सिंगी खंबान कहते हैं ।
- सतलुज, व्यास, रावी, चिनाब और झेलम सिन्धु नदी की प्रमुख सहायक नदियाँ हैं ।
- अन्य सहायक नदियाँ – जास्कर, स्यांग, शिगार, गिलगिट, श्योक, हुंजा, कुर्रम, नुबरा, गास्टिंग व द्रास, गोमल ।
- अंततः यह नदी अटक (पंजाब प्रांत, पाकिस्तान) के निकट पहाड़ियों से बाहर निकलती हैं । जहाँ दाहिने तट पर काबुल, तोची, गोमल, विबोआ और संगर नदियाँ इसमें मिलती हैं ।
- यह नदी दक्षिण की ओर बहती हुई मिठनकोट के निकट पंचनद का जल प्राप्त करती हैं । पंचनद नाम पंजाब की पाँच मुख्य नदियों सतलुज, व्यास, रावी, चिनाब, झेलम को संयुक्त रूप से दिया गया हैं ।

सिन्धु की प्रमुख सहायक नदियाँ : -

1. सतलुज नदी 2. व्यास नदी
3. रावी नदी 4. चिनाब नदी
5. झेलम नदी

सिन्धु नदी तंत्र

सिन्धु जल संधि (1960)

तीन पूर्वी नदियों - व्यास, रावी, सतलुज का नियंत्रण भारत तथा 3 पश्चिमी नदियों सिन्धु, झेलम, चेनाब का नियंत्रण पाकिस्तान को दिया गया -

1. व्यास, रावी, सतलुज	80% पानी भारत
	20% पानी पाकिस्तान
2.सिन्धु, झेलम, चिनाब	80% पानी पाकिस्तान
	20% पानी भारत

- **उपनाम**- चर्मवती, राजस्थान की कामधेनु
- राजस्थान का एकमात्र हैंगिंग ब्रिज (कोटा) इसी नदी पर हुआ है । इस नदी पर 4 बाँध बने हुए है (1) गांधी सागर (MP) 2. राणा प्रताप सागर (चित्तौड़गढ़, राजस्थान) 3. कोटा बैराज (कोटा, राजस्थान) जवाहरसागर (कोटा, राजस्थान)
- इटावा (UP) के निकट यमुना में मिल जाती है ।

सिन्ध

- **उद्गम**- मालवा का पठार, विदिशा (MP)
- बुंदेलखण्ड (UP) के निकट यमुना में मिल जाती है ।
- इस नदी पर मध्यप्रदेश राज्य में मानीखेडा बाँध बनाया गया हैं।

बेतवा

- **उद्गम**- विंध्यांचल पर्वतमाला (MP)
- हमीरपुर (UP)के पास यमुना में विलेय
- इस पर मध्यप्रदेश राज्य में माताटीला परियोजना स्थित है।
- **केन**- यह नदी मध्यप्रदेश के पन्ना राष्ट्रीय उद्यान से होकर गुजरती है।
- **उद्गम**- कैमूर की पहाड़ी (M.P.)
- फतेहपुर के निकट यमुना में विलेय

सोन नदी- यह मध्यप्रदेश में अमरकंटक की पहाड़ियों से निकलती है तथा पटना से पहले गंगा के दायीं तट से इससे मिल जाती हैं।

दामोदर नदी

- **उद्गम**- छोटानागपुर पठार (झारखण्ड)
- दाहिनी ओर से मिलने वाली गंगा की अंतिम सहायक नदी।
- यह नदी ढाल पर बहती है तो सीढ़ीनुमा जल प्रपातों का निर्माण करती है तथा ऐसे जल प्रपातों को सोपानी जल प्रपात /Terraced slope / क्षिप्रिकाएँ कहते है ।
- भारत में सर्वाधिक क्षिप्रिकाएँ बनाने वाली नहीं है ।
- इसे बंगाल का शोक कहते है
- विश्व में सर्वाधिक क्षिप्रिकाएँ बनाने वाली नदी- कोलरेडो नदी (U.S.A.)
- बहुउद्देशीय परियोजना के तहत कुल- 8 बाँध बनाए गए।
- भारत में सबसे प्राचीन नदी घाटी परियोजना है । कार्य- 1948 में प्रारम्भ

NOTE- विश्व की सबसे प्राचीन नदी घाटी परियोजना- टेनिस (USA)

रामगंगा नदी- इसका उद्गम उत्तराखंड राज्य में हिमालय पर्वतीय क्षेत्र में नमीक ग्लेशियर से होता है।

- यहां से उत्तराखंड व उत्तर प्रदेश राज्यों में बनने के बाद उत्तर प्रदेश के कन्नौज स्थान पर जाकर गंगा नदी में मिल जाती है। उत्तराखंड राज्य में नैनीताल नगर स्थित है।
- रामगंगा नदी पर उत्तराखंड राज्य में स्थित जिम कार्बेट नेशनल पार्क (नया नाम रामगंगा नेशनल पार्क हैं) स्थित है। इस नदी के किनारे उत्तर प्रदेश राज्य के मुरादाबाद, बरेली व बदायूं नगर स्थित है ।

गोमती नदी- यह नदी उत्तरप्रदेश के पीलीभीत जिले से निकलती है तथा गाजीपुर में गंगा नदी से मिलती है।

- लखनऊ व जौनपुर इसी के किनारे बसे हैं ।

घाघरा नदी- तिब्बत के पठार में स्थित मापचाचुंगों हिमनद से निकलती हैं तथा बाराबंकी जिला (उत्तरप्रदेश) में सरयू (शारदा नदी) इससे आकर मिलती है। और अन्ततः यह छपरा (बिहार) में गंगा से मिलती है

गंडक नदी – नेपाल (धौलागिरि व माउंट एवरेस्ट) से इसका उद्गम होता है तथा यह अन्ततः सोनपुर (बिहार) में गंगा से मिल जाती हैं।

- यह नदी बिहार राज्य के वाल्मीकि नेशनल पार्क से गुजरती हैं।

कोसी नदी –

- इसका स्त्रोत तिब्बत में माउंट एवरेस्ट के उत्तर में है जहाँ से इसकी मुख्य धारा अरूण निकलती है।
- कोसी नदी को बिहार का शोक कहा जाता है।

महानंदा नदी –

- महानंदा गंगा के बाएँ तट पर मिलने वाली अंतिम सहायक नदी है जो दार्जिलिंग की पहाड़ियों से निकलती है।

<u>ब्रह्मपुत्र नदी तंत्र</u> (The Brahmaputra River System)

ब्रह्मपुत्र नदी का उद्गम हिमालय के उत्तर में स्थित मानसरोवर झील के निकट चेमयांगडुंग ग्लेशियर (हिमनद) से होता है।

- तिब्बत में ब्रह्मपुत्र को सांग्पो (Tsangpo) के नाम से जाना जाता है। जिसका अर्थ शेरनी होता है ।
- नामचा बरवा के निकट हिमालय को काटकर तथा "U" टर्न बनाते हुए गहरे गार्ज (महाखंड) का निर्माण करती है और दिहांग के नाम से भारत में प्रवेश करती हैं।
- कुछ दूर तक दक्षिण-पश्चिम दिशा में बहने के बाद इसकी दो प्रमुख सहायक नदियाँ दिबांग और लोहित इसके बाएँ किनारे पर आकर मिलती हैं।
- इसके बाद इस नदी को ब्रह्मपुत्र के नाम से जाना जाता है।
- ब्रह्मपुत्र नदी असम के काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान से निकलती है जो एक सींग वाले के लिए प्रसिद्ध है ।
- इसकी अन्य सहायक नदियाँ धनसरी, सुबनसिरी, मानस, कामेग व संकोश, पगलादिया आदि हैं।
- ब्रह्मपुत्र नदी की कुल लम्बाई 2900 किमी है, जिसमें 916 किमी. भारत में बहती है।
- असम के धुबरी के निकट ब्रह्मपुत्र दक्षिण दिशा में बहती हुई बांग्लादेश में प्रवेश करती है।
- बांग्लादेश में ब्रह्मपुत्र को जमुना के नाम से जाना जाता है।
- जमुना में दाहिनी ओर से तिस्ता नदी आकर मिलती है। जमुना आगे जाकर पदमा में मिल जाती है तथा पदमा मेघना से मिलने के बाद, मेघना नाम से बंगाल की खाड़ी में गिरती है।

अध्याय – 9
प्रमुख खनिज

- खनिज से तात्पर्य प्राकृतिक रूप में पाए जाने वाले ऐसे पदार्थों से है जिसका निश्चित रासायनिक, भौतिक गुणधर्म एवं रासायनिक संगठन हो तथा उनको खनन उत्खनन के द्वारा प्राप्त किया जाता है साथ ही इन सभी का आर्थिक महत्त्व हो, खनिज संसाधन कहलाते हैं।
- पृथ्वी की भी पर्पटी पर पाए जाने वाले प्रमुख खनिज निम्न हैं-

खनिज	प्रतिशत
ऑक्सीजन	46.60
सिलिकन	27.72
एलुमिनियम	8.13
लौह	5.00
कैलशियम	3.63
सोडियम	2.83
पोटैशियम	2.59
मैगनेशियम	2.09
अन्य	1.41

- भारत में आजादी के समय तक 22 प्रकार के खनिजों का खनन किया जाता था लेकिन आज इनकी संख्या बढ़कर 125 हो गई है, इनमें से 35 खनिज आर्थिक दृष्टि से बहुत ही महत्त्वपूर्ण हैं। अभी तक मानव को लगभग 1600 प्रकार के खनिजों का ज्ञान हो चुका है।
- खनिजों की आत्मनिर्भरता की दृष्टि से संयुक्त राज्य अमेरिका प्रथम, भारत द्वितीय स्थान पर तथा रूस तृतीय स्थान पर है।

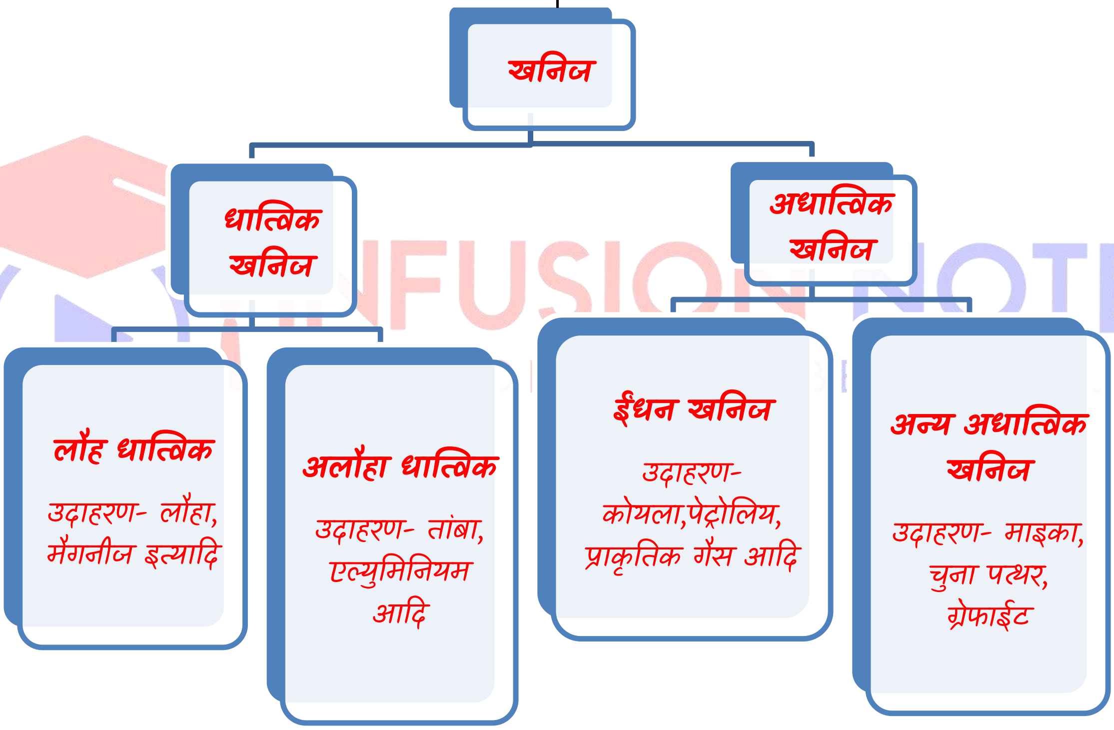

भारत में खनिजों का वितरण -

खनिज संसाधनों की मेखलायें (Belts of Mineral Resources)

भारत में खनिजों का वितरण समान नहीं हैं । भारत में पाये जाने वाले विविध प्रकार के खनिजों को उनके वितरण के अनुसार निम्न मेखलाओं में सीमाबद्ध किया जा सकता है ।

1. बिहार-झारखण्ड-उड़ीसा-पश्चिम बंगाल मेखला :

✓ यह मेखला छोटा नागपुर व समीपवर्ती क्षेत्रों में फैली हुई हैं। यह मेखला लौह अयस्क मैंगनीज, ताँबा, अभ्रक, चूना पत्थर, इल्मेनाइट, फॉस्फेट, बॉक्साइट आदि खनिजों की दृष्टि से धनी है । झारखण्ड खनिज उत्पादन की दृष्टि से प्रमुख राज्य है ।

2. मध्यप्रदेश – छत्तीसगढ़ – आंध्रप्रदेश -महाराष्ट्र मेखला :

✓ इस मेखला में भी लौह अयस्क, मैंगनीज, बॉक्साइट, चूना पत्थर, ऐस्बेस्टॉस, ग्रेफाइट, अभ्रक, सिलिका, हीरा आदि बहुलता से प्राप्त होते हैं।

3. कर्नाटक - तमिलनाडु मेखला :

✓ यह मेखला सोना, लिग्नाइट, लौह अयस्क, ताँबा, मैंगनीज, जिप्सम, नमक, चूना पत्थर के लिए प्रसिद्ध है।

4. राजस्थान - गुजरात मेखला :

✓ यह मेखला पैट्रोलियम, प्राकृतिक गैस, यूरेनियम, ताँबा, जस्ता, घीया पत्थर, जिप्सम, नमक, मुल्तानी मिट्टी आदि खनिजों की दृष्टि से धनी है।

✓ राजस्थान के गोट – मंगलोद्ध क्षेत्र में जिप्सम खनिज पाया जाता है ।

- राजस्थान सीसा और जस्ता अयस्कों, सेलेनाइट और वोलास्टोनाइट का एकमात्र उत्पादक है।

प्रश्नः- गोट-मंगलोढ़ क्षेत्र का संबंध किस खनिज से है?

(1) रॉक – फॉस्फेट (2) टंगस्टन

(3) मैंगनीज (4) जिप्सम **(4)**

प्रश्नः- निम्नलिखित में से कौन से खनिजों का राजस्थान लगभग अकेला उत्पादक राज्य है ?

(अ) सीसा एवं जस्ता अयस्क (ब) ताम्र अयस्क

(स) वोलेस्टोनाइट (द) सेलेनाइट

कूट :

(1) (अ) एवं (स)

(2) (अ), (ब) एवं (द)

(3) (अ), (ब) एवं (स)

(4) (अ), (स) एवं (द) **(4)**

5. केरल मेखला :

- केरल राज्य में विस्तृत इस मेखला में इल्मेनाइट, जिरकन, मोनाजाइट आदि अणुशक्ति के खनिज, चिकनी मिट्टी, गार्नेट आदि बहुलता से पाये जाते है।

- **लौह अयस्क (Iron Ore)**

- भारत में लौह अयस्क मुख्यतः प्रायद्वीपीय धारवाड़ संरचना में पाया जाता है।
- विश्व के कुल लौह अयस्क का लगभग 3 प्रतिशत भारत में निकाला जाता है।
- कुल उत्पादन का 50 प्रतिशत से भी अधिक निर्यात कर दिया जाता है।
- गोवा में उत्पादित होने वाले संपूर्ण लौह अयस्क को निर्यात कर दिया जाता है ।

लौह अयस्क के प्रकार (Types of Iron - Ore)

भारत में लौह अयस्क मुख्यतः 4 प्रकार का प्राप्त होता है :

1. मैग्नेटाइट 2. हेमेटाइट 3. लिमोनाइट 4. सिडेराइट

1. मैग्नेटाइट :- यह सर्वोच्च किस्म का लौह अयस्क होता है, जिसमें शुद्ध धातु का अंश 72 प्रतिशत तक होता है।

- इसका रंग काला होता है ।
- यह आग्नेय शैलों में पाया जाता है ।
- इसमें चुम्बकीय लोहे के ऑक्साइड होते हैं । मैग्नेटाइट अयस्क के भण्डार कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, तमिलनाडु, गोवा, झारखण्ड आदि राज्यों में पाये जाते हैं ।

2. हेमेटाइट :- यह लाल या भूरे रंग का होता है ।

- इसमें शुद्ध धातु की मात्रा 60-70 प्रतिशत तक होती है ।
- यह मुख्यतः झारखण्ड, मध्यप्रदेश, उड़ीसा, महाराष्ट्र, कर्नाटक व गोवा राज्यों में मिलता है।

3. लिमोनाइट :-इसका रंग पीला या हल्का भूरा होता है ।

- इसमें 30 से 50 प्रतिशत तक शुद्ध धातु का अंश होता है।
- यह पश्चिम बंगाल, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश आदि राज्यों में पाया जाता है ।

4. सिडेराइट :- इस किस्म के लौहे का रंग हल्का भूरा होता है। इसमें धातु का अंश 40 से 48 प्रतिशत तक होता है तथा अशुद्धियाँ अधिक होती है ।

कर्नाटक

- यह राज्य भारत के लौह अयस्क उत्पादन में 24.80 प्रतिशत के साथ प्रथम स्थान है ।
- यहाँ पर कादर (बाबा बदून की पहाड़ियाँ), बेलारी, हास्पेट, शिमोगा, धारवाड़, तुमकुर, चिकमंगलूर चित्रदुर्ग आदि प्रमुख लौह अयस्क उत्पादक जिले हैं ।
- राज्य में हेमेटाइट किस्म की 55 से 65 प्रतिशत लौह अयस्क वाली धातु निकाली जाती है ।

उड़ीसा

- देश में लौह अयस्क उत्पादन में 22.13 प्रतिशत के साथ देश में दूसरा स्थान है ।
- यहाँ पर मयूर भंज (गुरुम हिसानी, सुलेमात और बादाम पहाड़), सुन्दरगढ़, बोनाई, सम्बलपुर व कटक महत्त्वपूर्ण लौह अयस्क उत्पादन जिले हैं ।
- यहाँ हेमेटाईट किस्म की 58 से 60 प्रतिशत तक अयस्क वाली धातु पाई जाती है ।

छत्तीसगढ़

- यह राज्य 19.97 प्रतिशत उत्पादन करके तीसरा स्थान रखता है ।
- यहाँ बस्तर और दुर्ग सबसे महत्त्वपूर्ण लौह अयस्क उत्पादक जिले हैं जबलपुर, राजगढ़, बिलासपुर, सरगुजा, बालासर आदि अन्य उत्पादक जिले हैं ।
- यहाँ हेमेटाइट किस्म की 50 से 66 प्रतिशत तह लौह अयस्क वाली धातु निकाली जाती है ।

गोवा- देश में 18.05 प्रतिशत लौह अयस्क उत्पादन कर चौथे स्थान पर है ।

- यहाँ मिरना अदोल पाले ओनडा, कुडनम, प्रिंससलेम, आदि प्रमुख उत्पादक जिले हैं । लोहे को साफ करके मारमगोवा बन्दरगाह से जापान को निर्यात कर दिया जाता है ।
- यहाँ घटिया किस्म का लोहा निकाला जाता है जिसमें लौह अंश की मात्रा 50 प्रतिशत तक होती है ।

झारखण्ड- देश में लौह अयस्क उत्पादन में इसका 14.11 प्रतिशत के साथ पाँचवाँ स्थान है ।

- यहाँ सिंह भूमि (नोआमण्डी) मातभूमि, हजारी बाग आदि प्रमुख लौह अयस्क उत्पादन जिले हैं ।

महाराष्ट्र- यहाँ चन्द्रपुर जिले में पीपलगाँव, लौहार, देवलगाँव तथा रत्नागिरी जिले में लौहा अयस्क पाया जाता है ।

आन्ध्र प्रदेश- यहाँ आदिलाबाद, करीमनगर, निजामाबाद, कृष्णा, कुर्नूल, कुडप्पा, गुन्टूर, नैलोर, चित्तूर, बारगंल आदि प्रमुख लौह उत्पादक जिले हैं ।

- **कर्क रेखा राजस्थान में स्थितः-**

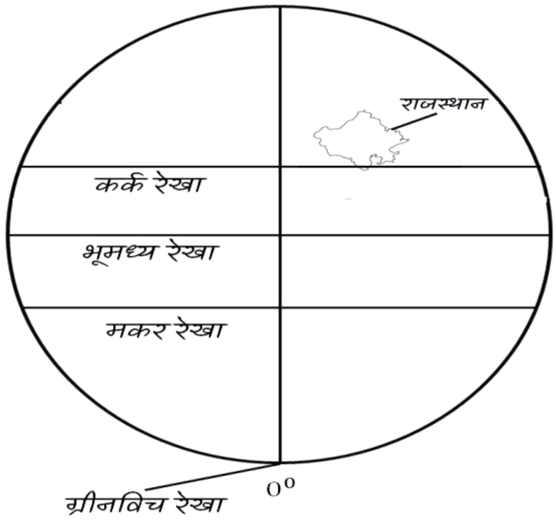

कर्क रेखा भारत के 8 राज्यों से होकर गुजरती है-

1. गुजरात 2. राजस्थान 3. मध्यप्रदेश 4. छत्तीसगढ़ 5. झारखंड 6. पश्चिम बंगाल 7. त्रिपुरा 8. मिजोरम

राजस्थान में **कर्क रेखा बाँसवाड़ा** जिले के मध्य से **कुशलगढ़ तहसील** से गुजरती है इसके अलावा कर्क रेखा डूंगरपुर जिले को भी स्पर्श करती है अर्थात् **कुल दो जिलों से होकर गुजरती है।**

राजस्थान में कर्क रेखा की कुल **लंबाई 26 किलोमीटर** है।
राजस्थान का सर्वाधिक भाग कर्क रेखा के उत्तरी भाग में स्थित है।

राजस्थान का कर्क रेखा से सर्वाधिक नजदीकी शहर बाँसवाड़ा है।

भूमध्य रेखा पर सूर्य की किरणें सर्वाधिक सीधी पड़ती है, अतः वहाँ पर तापमान अधिक होता है। जैसे - जैसे भूमध्य रेखा से दूरी बढ़ती जाती है, वैसे - वैसे सूर्य की किरणों का तिरछापन बढ़ता जाता है और तापमान में कमी आती जाती है।

राजस्थान में **बाँसवाड़ा जिले में सूर्य की किरणें सर्वाधिक सीधी** पड़ती है जबकि गंगानगर में सर्वाधिक तिरछी पड़ती है।

कारण - बाँसवाड़ा सर्वाधिक दक्षिण में स्थित है तथा श्रीगंगानगर सबसे उत्तर में स्थित है।

राजस्थान की भौगोलिक स्थिति के अनुसार राज्य का सबसे गर्म जिला बाँसवाड़ा होना चाहिए एवं राज्य का सबसे ठंडा जिला श्रीगंगानगर होना चाहिए लेकिन वर्तमान में राज्य का **सबसे गर्म व सबसे ठंडा जिला चूरु** है। यह जिला सर्दियों में सबसे अधिक ठंडा एवं गर्मियों में सबसे अधिक गर्म रहता है। इसका कारण यहाँ पाई जाने वाली **रेत व जिप्सम** है।

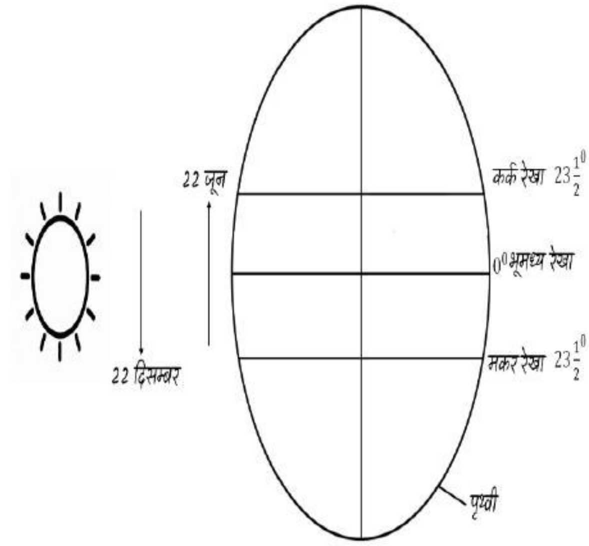

चित्रः- मानचित्र को ध्यान से समझिए

नोट - जैसे कि ऊपर दिए गए मानचित्र में समझाया है कि, सूर्य 21 जून को सीधा कर्क रेखा पर और 22 दिसंबर को सीधा मकर रेखा पर चमकता है।

- इसके अलावा सूर्य 21 मार्च और 23 सितंबर को सीधे भूमध्य रेखा पर चमकता है। अर्थात् 21 जून को कर्क रेखा पर सीधे चमकने के बाद जुलाई से दिसंबर तक जैसे -जैसे समय बढ़ता जाता है वैसे - वैसे सूर्य का सीधा प्रकाश मकर रेखा की ओर बढ़ता जाता है, फिर 22 दिसंबर तक मकर रेखा पर पहुंचने के बाद जनवरी, फरवरी से जून तक जैसे-जैसे समय बढ़ता है वैसे - वैसे सूर्य का सीधा प्रकाश कर्क रेखा की ओर बढ़ता है।अर्थात् सूर्य की सीधी किरणें कर्क रेखा और मकर रेखा के बीच में पड़ती है इस क्षेत्र को **उष्णकटिबंधीय क्षेत्र कहते** है। ध्रुवों पर सूर्य की किरणें ना पहुंचने के कारण वहाँ वर्ष भर बर्फ पाई जाती है।

पूर्वी देशांतरीय भाग सूर्य के सबसे पहले सामने आता है, इस कारण **सर्वप्रथम सूर्योदय व सूर्यास्त राजस्थान के पूर्वी भाग धौलपुर** में होता है, जब कि सबसे पश्चिमी जिला जैसलमेर है। अतः जैसलमेर में सबसे अंत में सूर्योदय व सूर्यास्त होता है।

विस्तारः-

राजस्थान राज्य की **उत्तर से दक्षिण** तक की **कुल लंबाई 826 किलोमीटर** है तथा इसका विस्तार उत्तर में

श्रीगंगानगर जिले के कोणा गाँव से दक्षिण में बाँसवाड़ा जिले की कुशलगढ़ तहसील के बोरकुंड गाँव तक है।

इसी प्रकार **पूर्व से पश्चिम तक** की **चौड़ाई 869 किलोमीटर** है तथा विस्तार पूर्व में धौलपुर जिले के जगमोहनपुरा की ढाणी, सिलाना गाँव, राजाखेड़ा तहसील से पश्चिम में जैसलमेर जिले के कटरा गाँव (सम-तहसील) तक है।

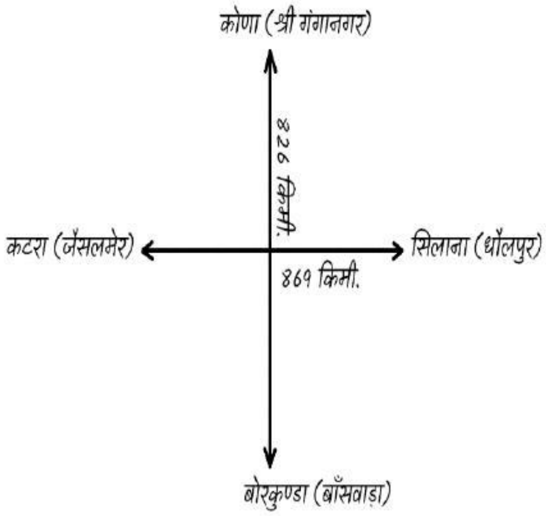

आकृति

विषम कोणीय चतुर्भुज या **पतंग** के आकार के समान है।

राज्य की स्थलीय सीमा 5920 किलोमीटर (1070 अंतर्राष्ट्रीय व 4850 अंतर्राज्यीय) है।

रेडक्लिफ रेखा

- रेडक्लिफ रेखा भारत और पाकिस्तान के मध्य स्थित है। इसके संस्थापक सर सिरिल एम रेडक्लिफ को माना जाता है।
- रेडक्लिफ रेखा 17 अगस्त 1947 को भारत विभाजन के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच सीमा बन गई ।
- इसकी भारत के साथ कुल सीमा 3310 किलोमीटर है।

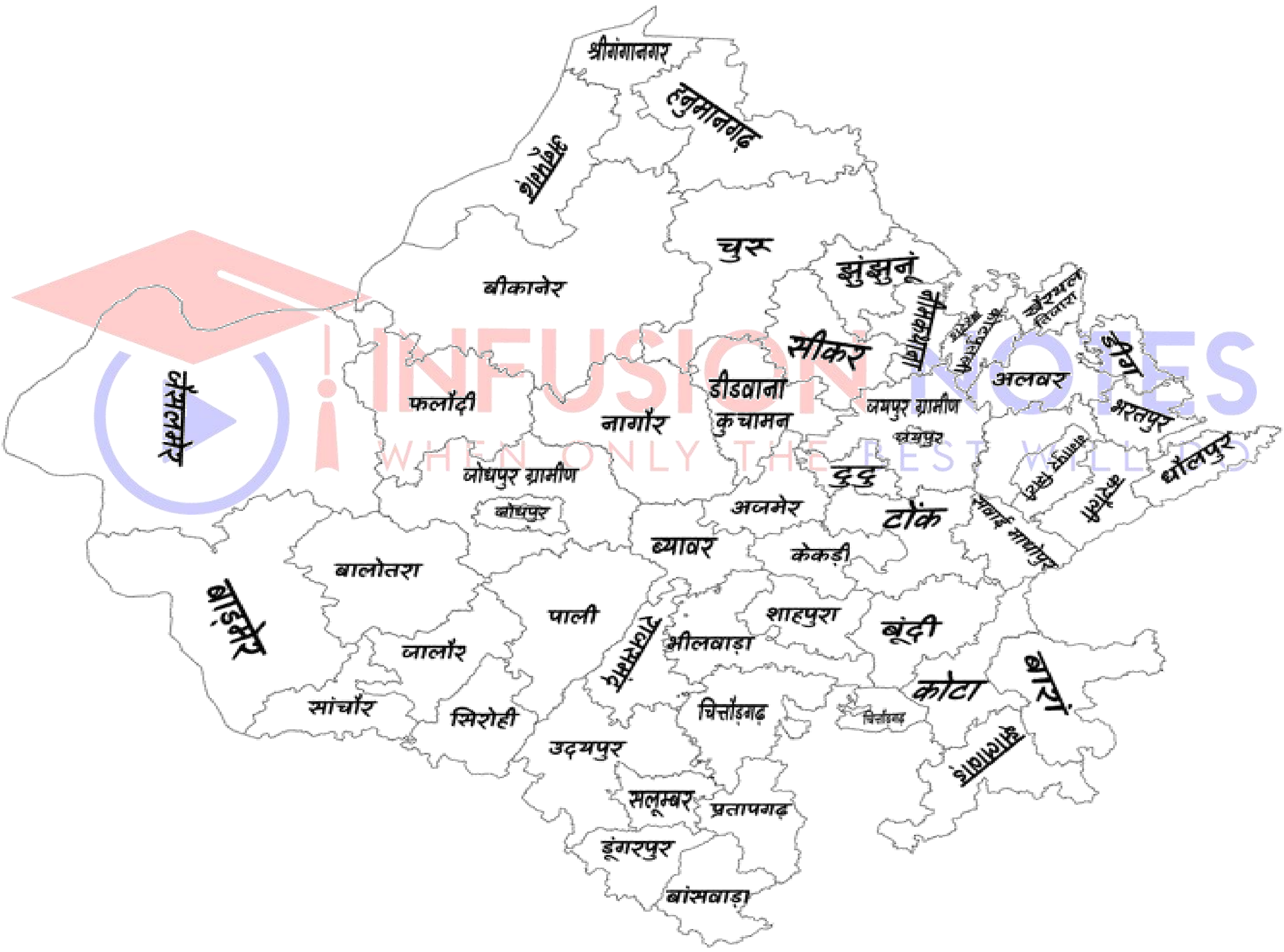

रेडक्लिफ रेखा पर भारत के तीन राज्य व दो केंद्र शासित प्रदेश स्थित हैं।

1. पंजाब (547 कि.मी.)
2. राजस्थान (1070 कि.मी.)
3. गुजरात (512 कि.मी.)
4. जम्मू-कश्मीर (1216 कि.मी.)
5. लेह-लद्दाख

- रेडक्लिफ रेखा के साथ **राजस्थान की सर्वाधिक सीमा - (1070 कि.मी.)**
- रेडक्लिफ रेखा के साथ **सबसे कम सीमा- गुजरात (512 कि.मी.)**
- रेडक्लिफ रेखा के सर्वाधिक नजदीक राजधानी मुख्यालय - श्रीनगर
- रेडक्लिफ रेखा के सर्वाधिक दूर राजधानी मुख्यालय - जयपुर
- रेडक्लिफ रेखा पर क्षेत्र में बड़ा राज्य - राजस्थान
- रेडक्लिफ रेखा पर क्षेत्र में सबसे छोटा राज्य - पंजाब

- रेडक्लिफ रेखा के साथ राजस्थान की कुल सीमा **1070 कि.मी.** है। जो **राजस्थान के छः जिलों** से लगती है।

1. श्रीगंगानगर-210 कि.मी.
2. अनूपगढ़
3. बीकानेर-168 कि.मी.
4. फलौदी
5. जैसलमेर- 464 कि.मी.
6. बाड़मेर- 228 कि.मी.

रेडक्लिफ पर सर्वाधिक सीमा जैसलमेर तथा न्यूनतम सीमा रेखा फलौदी बनाता है ।

- रेडक्लिफ रेखा राज्य में उत्तर में श्रीगंगानगर के **हिन्दूमल कोट** से लेकर दक्षिण - पश्चिम में बाड़मेर के बाखासर गाँव, सेडवा तहसील तक विस्तृत है।
- रेडक्लिफ रेखा पर पाकिस्तान के 9 जिले पंजाब प्रान्त का बहावलपुर, बहावल नगर व रहीमयारखान तथा सिंध प्रान्त के घोटकी, सुक्कुर, खैरपुर, संघर, उमरकोट व थारपाकर राजस्थान से सीमा बनाती हैं।

राजस्थान के साथ सर्वाधिक सीमा – बहावलपुर

राजस्थान के साथ न्यूनतम सीमा- खैरपुर

पाकिस्तान के दो प्रांत राजस्थान की सीमा को छूते हैं।

1. पंजाब प्रांत
2. सिंध प्रांत

- रेडक्लिफ रेखा एक कृत्रिम रेखा है।
- राजस्थान की रेडक्लिफ रेखा से सर्वाधिक सीमा जैसलमेर (464 कि.मी.) व न्यूनतम सीमा फलौदी की लगती है।
- रेडक्लिफ के नजदीक जिला मुख्यालय –अनूपगढ़
- रेडक्लिफ के सर्वाधिक दूर जिला मुख्यालय - बीकानेर
- रेडक्लिफ रेखा पर सबसे बड़ा जिला - जैसलमेर
- रेडक्लिफ रेखा पर सबसे छोटा जिला – श्रीगंगानगर

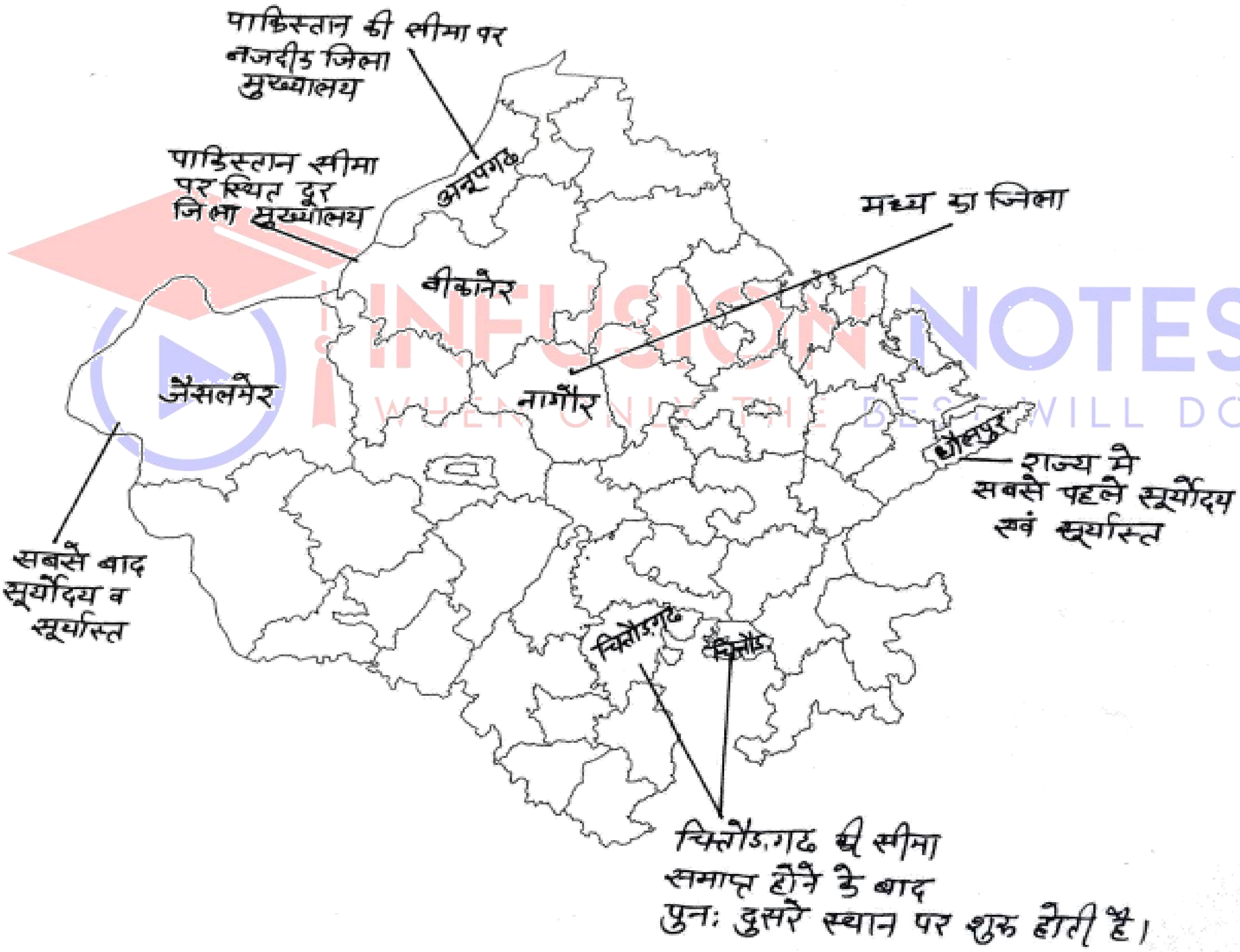

राजस्थान के केवल अंतर्राष्ट्रीय सीमा वाले जिले - 4 (बीकानेर, जैसलमेर, फलौदी, अनूपगढ़)

राजस्थान के 21 जिलें (जयपुर ग्रामीण, जयपुर, नागौर, डीडवाना-कुचामन, सीकर, गंगापुरसिटी, सलुम्बर, जोधपुर, जोधपुर ग्रामीण, बालोतरा, जालौर, पाली, राजसमन्द, शाहपुरा, केकड़ी, ब्यावर, अजमेर, टोंक, बूंदी, दौसा और दूदू) ऐसे जिलें हैं जो न तो अंतरराज्यीय सीमा बनाते हैं तथा न ही अंतरराष्ट्रीय ।

झालावाड मध्यप्रदेश के साथ सर्वाधिक सीमा (520 कि.मी) बनाता है तथा बाड़मेर गुजरात के साथ न्यूनतम 14 कि.मी. की सीमा बनाता है।

राजस्थान के 2 ऐसे जिले है जिनकी अंतर्राज्यीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सीमा है –

- भरतपुर जिले का पुनर्गठन कर नया जिला डीग गठित किया गया है।
- इस जिले में 9 तहसील (डीग, जनूथर, कुम्हेर, ररह, नगर, सीकरी, कामां, जुरहरा, पहाड़ी) हैं।

फलौदी :

- जोधपुर जिले का पुनर्गठन कर नया जिला फलौदी गठित किया गया है।
- इस जिले में 8 तहसील (फलौदी, लोहावट, आऊ, देचू, सेतरावा, बाप, घंटियाली, बापिणी) हैं।

जोधपुर (ग्रामीण)

- जोधपुर जिले का पुनर्गठन कर जोधपुर (ग्रामीण) जिला गठित किया जाता है।
- जोधपुर (ग्रामीण) जिले में 15 तहसील (जोधपुर उत्तर तहसील (जोधपुर का नगर निगम जोधपुर के अन्तर्गत आने वाले भाग को छोडकर शेष समस्त भाग), जोधपुर दक्षिण तहसील (जोधपुर का नगर निगम जोधपुर के अन्तर्गत आने वाले भाग को छोडकर शेष समस्त भाग) कुडी भक्तासनी, लूणी, झंवर, बिलाडा, भोपालगढ, पीपाड़सिटी, ओसियाँ, तिवरी, बावडी, शेरगढ, बालेसर, सेखला व चामू) हैं।

जोधपुर :

- जोधपुर जिले का पुनर्गठन कर जोधपुर जिला गठित किया गया है ।
- इस जिले में 2 तहसील जोधपुर उत्तर (जोधपुर तहसील का नगर निगम जोधपुर के अन्तर्गत आने वाला समस्त भाग), जोधपुर दक्षिण (जोधपुर तहसील का नगर निगम जोधपुर के अन्तर्गत आने वाला समस्त भाग) हैं।

गंगापुरसिटी –

- **जिला मुख्यालय** – गंगापुरसिटी
- सवाईमाधोपुर एवं करौली जिलों का पुनर्गठन कर नया जिला गंगापुरसिटी गठित किया गया है।
- इस जिले में 7 तहसील (गंगापुरसिटी, तलावड़ा, वजीरपुर, बामनवास, बरनाला, टोडाभीम, नादोती हैं।
- टोडाभीम और नादोती तहसील को करौली से जोड़ा गया है। अन्य सभी को सवाईमाधोपुर से जोड़ा गया है।

दूदू –

- **जिला मुख्यालय** - दूदू
- जयपुर जिले का पुनर्गठन कर नया जिला दूदू गठित किया गया ।
- इस जिले में 3 तहसील (मौजमाबाद, दूदू फागी) हैं।

जयपुर (ग्रामीण)

जिला मुख्यालय - जयपुर

जयपुर जिले का पुनर्गठन कर जयपुर (ग्रामीण) जिला गठित किया गया है ।

जयपुर ग्रामीण जिले में 18 तहसील (जयपुर तहसील (जयपुर का नगर निगम जयपुर (हेरीटेज) एवं नगर निगम जयपुर (ग्रेटर) के अन्तर्गत आने वाले भाग को छोडकर शेष समस्त भाग) तहसील कालवाड़ का नगर निगम जयपुर (ग्रेटर) के अन्तर्गत आने वाले भाग को छोड़कर शेष समस्त भाग, तहसील सांगानेर का नगर निगम जयपुर (ग्रेटर) के अन्तर्गत आने वाले भाग को छोडकर शेष समस्त भाग, तहसील आमेर का नगर निगम जयपुर (हेरीटेज) के अन्तर्गत आने वाले भाग को छोडकर शेष समस्त भाग, जालसू. बस्सी, तुंगा, चाकसू, कोटखावदा, जमवारामगढ, आंधी, चौमू, फुलेरा (मु.-सांभरलेक), माधोराजपुरा, रामपुरा डाबडी, किशनगढ़ रेनवाल, जोबनेर, शाहपुरा) हैं।

जयपुर –

जिला मुख्यालय - जयपुर

जयपुर जिले का पुनर्गठन कर जयपुर जिला गठित किया गया है।

जयपुर जिले में 4 तहसील (जयपुर तहसील का नगर निगम जयपुर (हेरीटेज) एवं नगर निगम जयपुर (ग्रेटर) के अन्तर्गत आने वाला समस्त भाग. तहसील कालवाड का नगर निगम जयपुर (ग्रेटर) के अन्तर्गत आने वाला समस्त भाग, तहसील आमेर का नगर निगम जयपुर (हेरीटेज) के अन्तर्गत आने वाला समस्त भाग, तहसील सांगानेर का नगर निगम जयपुर (ग्रेटर) के अन्तर्गत आने वाला समस्त भाग) हैं।

कोटपूतली-बहरोड –

- **जिला मुख्यालय** - कोटपूतली-बहरोड़
- जयपुर एवं अलवर जिलों का पुनर्गठन कर नया जिला कोटपूतली- बहरोड़ गठित किया गया है
- कोटपूतली - बहरोड़ जिले में 8 तहसील (बहरोड़, बानसूर, नीमराना, मांढण, नारायणपुर कोटपूतली. विराटनगर, पावटा) हैं। कोटपूतली, विराटनगर, पावटा को जयपुर से जोड़ा गया है, अन्य सभी को अलवर से जोड़ा गया है।

खैरथल-तिजारा –

- **जिला मुख्यालय** - खैरथल
- अलवर जिले का पुनर्गठन कर नया जिला खैरथल तिजारा गठित किया गया है।
- नवगठित खैरथल-तिजारा जिले में 7 तहसील (तिजारा, किशनगढ़बास, खैरथल, कोटकासिम, हरसोली, टपूकडा, मुंडावर) हैं।

नीम का थाना :-

- **जिला मुख्यालय** - नीम का थाना में
- सीकर और झुंझुनूं जिलों का पुनर्गठन करके नीमकाथाना का गठन किया गया है।
- इस नवगठित जिले के तहत 4 उपखंड (नीम का थाना, श्रीमाधोपुर, उदयपुरवाटी और खेतड़ी) शामिल किए गए हैं।
- इसमें नीमकाथाना और श्री माधोपुर को सीकर जिले से तथा उदयपुरवाटी और खेतड़ी को झुंझुनू जिले से शामिल किया गया है।

ब्यावर :-

- **जिला मुख्यालय** - ब्यावर

- अजमेर, पाली, राजसमंद और भीलवाड़ा जिलों का पुनर्गठन करके नया जिला ब्यावर गठित किया गया है।
- इस नव गठित ब्यावर जिले में 6 उपखंड (ब्यावर, टाटगढ़, जैतारण, रायपुर, मसूदा और बिजनौर) शामिल किए गए हैं।

केकड़ी :-

जिला मुख्यालय - केकड़ी

अजमेर और टोंक जिले को पुनर्गठित करके नया जिला केकड़ी बनाया गया है।

केकड़ी जिले में 5 उपखंड शामिल किए गए हैं। इनमें केकड़ी, सावर, भिनाय, सरवाड़ और टोडारायसिंह शामिल हैं।

सलूम्बर :-

जिला मुख्यालय - सलूम्बर

उदयपुर जिले का पुनर्गठन करके नए जिले सलूम्बर का गठन किया गया है।

सलूंबर जिले में 4 उपखंड (सराडा, सेमारी, लसाडिया और सलूम्बर) शामिल किए गए हैं।

शाहपुरा :-

जिला मुख्यालय - शाहपुरा

भीलवाड़ा जिले का पुनर्गठन करके नया जिला शाहपुरा बनाया गया है।

शाहपुरा जिले में 6 उपखंड (शाहपुरा, जहाजपुर, फूलियाकलां, बनेड़ा और कोटडी) शामिल किए गए हैं।

सांचौर :-

जिला मुख्यालय – सांचौर

जालौर जिले का पुनर्गठन करके नए जिले सांचौर का गठन किया गया है।

सांचौर जिले में 4 उपखंड (सांचौर, बागोड़ा, चितलवाना और रानीवाड़ा) शामिल किए गए हैं।

<u>राजस्थान के संभाग</u>

30 मार्च 1949 को राजस्थान में संभागीय व्यवस्था की शुरुआत हुई थी ।

शुरुआत में राजस्थान में 5 संभाग (जयपुर, जोधपुर, कोटा, उदयपुर, बीकानेर) थे।

24 अप्रैल 1962 को संभागीय व्यवस्था को तत्कालीन मुख्यमंत्री मोहनलाल सुखाडिया ने बंद कर दिया ।

संभागीय व्यवस्था की पुनः शुरुआत 26 जनवरी 1987 को तत्कालीन मुख्यमंत्री हरिदेव जोशी नें की तथा अजमेर को जयपुर से अलग कर छठा संभाग बनाया ।

4 जून 2005 को तत्कालीन मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे नें भरतपुर को सातवाँ संभाग बनाया ।

7 अगस्त 2023 को रामलुभाया कमेटी की सिफारिश पर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत द्वारा सीकर, पाली और बांसवाड़ा 3 नये संभाग व 19 नये जिले बनाये गये ।

3 नवगठित व 7 पुराने संभागों को मिलाकर राजस्थान में कुल 10 संभाग हो गये हैं।

राजस्थान के 10 संभागो के नाम निम्नलिखित है-

1. अजमेर	2. उदयपुर
3. कोटा	4. जयपुर
5. जोधपुर	6. पाली
7. बांसवाडा	8. बीकानेर
9. भरतपुर	10. सीकर

"सारांश"

- वन संपदा को हरा सोना व मानव का सुरक्षा कवच कहा जाता है। राजस्थान में वर्तमान में 3 राष्ट्रीय उद्यान, 27 वन्य जीव अभयारण्य, 3 बाघ परियोजनाएँ, 15 संरक्षित क्षेत्र व दो रामसर स्थल है।
- राजस्थान सरकार द्वारा 1953 में वन अधिनियम लागू किया गया। राजस्थान सरकार द्वारा राज्य की प्रथम वन नीति 2010 को लागू की गई।
- क्षेत्रफल के अनुसार राजस्थान में सबसे अधिक वन उदयपुर जिले में पाए जाते हैं, जबकि सबसे कम वन चुरू जिले में पाए जाते हैं।
- जलवायु की दृष्टि से राजस्थान में रक्षित या सुरक्षित वन अति महत्त्वपूर्ण है।
- शुष्क सागवान वन प्रतापगढ़ के सीतामाता अभयारण्य में सर्वाधिक पाए जाते हैं।
- उपोष्ण कटिबंधीय सदाबहार वन सिरोही के माउंट आबू में पाए जाते हैं। इन्हें 'सदाबहार वन' कहते हैं
- रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान राजस्थान की प्रथम बाघ परियोजना है।
- केवलादेव घना पक्षी बिहार को UNESCO द्वारा 1985 में विश्व प्राकृतिक धरोहर की सूची में शामिल किया है। यह पक्षियों का स्वर्ग एवं एशिया की सबसे बड़ी प्रजनन स्थली भी है।
- गागरोनी तोता / हीरामन तोता / हिंदुओं का आकाश लोचन मुकुंदरा हिल्स में पाया जाता है। मुकुंदरा हिल्स धौंकड़ा वनों के लिए प्रसिद्ध है।
- राष्ट्रीय मरु उद्यान (जैसलमेर) में आँकल वुड फॉसिल पार्क एवं लाठी सीरीज स्थित है।
- सीतामाता अभयारण्य (प्रतापगढ़) में उड़न गिलहरियाँ / मशोवा पाई जाती है।
- रुँख भायला एवं खेजड़ा ऑपरेशन (1991) खेजड़ी वृक्ष से संबंधित है। खेजड़ी को मरुस्थल का सागवान कहा जाता है।
- पलाश / खाखरा को जंगल की आग कहा जाता है।
- बाँस को आदिवासियों का 'हरा सोना' कहते हैं।
- महुआ को आदिवासियों का 'कल्पवृक्ष' कहते हैं ।
- अमृता देवी स्मृति पुरस्कार पर्यावरण से संबंधित राज्य का सर्वोच्च पुरस्कार है।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न

1. राजस्थान का निम्न में से कौन सा वृक्ष गोंद का स्त्रोत नहीं है -
   a. बबूल b. बांस
   c. नीम d. पीपल **उत्तर - B**

2. राजस्थान में निम्नांकित में से कौन-सी मुख्य वन उपज नहीं मानी जाती है?
   a. इमारती लकड़ी b. ईंधन लकड़ी
   c. तेंदूपत्ता d. बांस **उत्तर - C**

3. अमृता देवी पुरस्कार किस कार्य हेतु दिया जाता है।
   a. उद्यानों के विकास हेतु
   b. वन सुरक्षा के साहित्य हेतु
   c. वन एवं वन्य जीव सुरक्षा हेतु
   d. वृक्षारोपण हेतु **उत्तर - C**

4. राजस्थान में जोजोबा का पौधा सर्वप्रथम कहाँ लाया गया है?
   a. काजरी (जोधपुर) b. सूरतगढ़
   c. फतेहपुर (सीकर) d. प्रतापगढ़ **उत्तर -A**

5. रेत का तीतर नाम से कौनसा पक्षी प्रसिद्ध है, यह किस अभयारण्य में पाया जाता है -
   a. हीरामन सौंकलिया b. बटबड़ गजनेर
   c. हरा तोता, सरिस्का d. हिंदू लोचन, अजमेर
   उत्तर - B

6. सुमेलित कीजिए-

अभयारण्य	**जिला**
A. बन्ध बरेठा	1) जयपुर ग्रामीण
B. सीतामाता	2) उदयपुर
C. नाहरगढ़	3) भरतपुर
D. फुलवारी की नाल	4) चित्तौड़गढ़

कूट

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	2	1	3	4
(B)	4	2	1	3
(C)	3	4	1	2
(D)	1	3	4	2

उत्तर - C

अध्याय – 12

खनिज – धात्विक एवं अधात्विक

खनिज

- खनिज :- वे प्राकृतिक पदार्थ हैं जो कि भू-गर्भ से खनन क्रिया द्वारा बाहर निकाले जाते हैं। खनिज प्रमुखतया प्राकृतिक एवं रासायनिक पदार्थों के संयोग से निर्मित होते हैं।
- इनका निर्माण अजैविक प्रक्रियाओं के द्वारा होता है। सामान्य शब्दों में, वे सभी पदार्थ जो कि खनन द्वारा प्राप्त किए जाते हैं, खनिज कहलाते हैं।
- जैसे – लोहा, अभ्रक, कोयला, बॉक्साइट (जिससे एल्युमिनियम बनता है), नमक (पाकिस्तान व भारत के अनेक क्षेत्रों में खान से नमक निकाला जाता है), जस्ता, चूना पत्थर इत्यादि।
- ऐसे खनिज जिनमें धातु की मात्रा अधिक होती है तथा उनसे धातुओं का निष्कर्षण करना आसान होता है उन्हें अयस्क कहते हैं।

जैसे-

धातु	**अयस्क**
हेमेटाइट	लोहा
बॉक्साइट	एल्युमिनियम
गैलेना	सीसा
डोलोमाइट	मैग्नीशियम
सिडेराइट	लोहा
मेलाकाइट	तांबा

खनिजों के प्रकार

खनिज तीन प्रकार के होते हैं; धात्विक, अधात्विक और ऊर्जा खनिज।

धात्विक खनिज:

लौह धातु: लौह अयस्क, मैगनीज, निकेल, आदि।

अलौहधातु: तांबा, लैंड, टिन, बॉक्साइट, कोबाल्ट आदि।

बहुमूल्य खनिज: सोना, चाँदी, प्लेटिनम, आदि।

अधात्विक खनिज:

अभ्रक, लवण, पोटाश, सल्फर, ग्रेनाइट, चूना, पत्थर, संगमरमर, बलुआ, पत्थर, आदि।

ऊर्जा खनिज: कोयला, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस।

खनिज के भंडार:

- आग्नेय और रूपांतरित चट्टानों में : - इस प्रकार की चट्टानों में खनिजों के छोटे जमाव शिराओं के रूप में, और बड़े जमाव परत के रूप में पाये जाते हैं ।
- जब खनिज पिघली हुई या गैसीय अवस्था में होती है तो खनिज का निर्माण आग्नेय और रूपांतरित चट्टानों में होता है।
- पिघली हुई या गैसीय अवस्था में खनिज दरारों से होते हुए भूमि की ऊपरी सतह तक पहुँच जाते हैं ।

उदाहरण: टिन, जस्ता, लैंड, आदि।

अवसादी चट्टानों में: - इस प्रकार की चट्टानों में खनिज परतों में पाये जाते हैं ।

1. मुख्यतः अधात्विक ऊर्जा खनिज पाए जाते हैं।

उदाहरण: कोयला, लौह अयस्क, जिप्सम, पोटाश लवण और सोडियम लवण, आदि।

धरातलीय चट्टानों के अपघटन के द्वारा: - जब अपरदन द्वारा शैलों के घुलनशील अवयव निकल जाते हैं तो बचे हुए अपशिष्ट में खनिज रह जाता है। बॉक्साइट का निर्माण इसी तरह से होता है।

जलोढ़ जमाव के रूप में : - इस प्रकार से बनने वाले खनिज नदी के बहाव द्वारा लाए जाते हैं और जमा होते हैं । इस प्रकार के खनिज रेतीली घाटी की तली और पहाड़ियों के आधार में पाए जाते हैं । ऐसे में वो खनिज मिलते हैं जिनका अपरदन जल द्वारा नहीं होता है ।

उदाहरण :- सोना, चाँदी, टिन, प्लेटिनम, आदि।

महासागर के जल में: - समुद्र में पाए जाने वाले अधिकतर खनिज इतने विरल होते हैं कि इनका कोई आर्थिक महत्व नहीं होता है । लेकिन समुद्र के जल से साधारण नमक, मैग्नीशियम और ब्रोमीन निकाला जाता है।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान में खनिज संसाधन –

प्रिय छात्रों राजस्थान में कई प्रकार के खनिज पाए जाते हैं।

- जैसा कि आपको पता है राजस्थान क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य है यहाँ पाई जाने वाली अधिक विविधताओं के कारण यह राज्य खनिज संपदा की दृष्टि से एक संपन्न राज्य है । और इसी वजह से इसे "खनिजों का अजायबघर" भी कहा जाता है ।
- दोस्तों **खनिज भंडार की दृष्टि से राजस्थान का देश में झारखंड के बाद दूसरा स्थान आता है जबकि खनिज उत्पादन मूल्य की दृष्टि से झारखंड, मध्यप्रदेश, गुजरात, असम के बाद राजस्थान का पांचवा स्थान है ।** राजस्थान में देश का कुल खनन क्षेत्र का 5.7% क्षेत्रफल आता है । देश में **सर्वाधिक खाने राजस्थान में स्थित हैं ।** देश के कुल खनिज उत्पादन में राजस्थान का योगदान 22% है।
- राजस्थान में खनिज मुख्य रूप से अरावली में पाए जाते है । अतः इसे खनिजों का भण्डारगृह कहा जाता है ।

राजस्थान की भूमिका :-

भंडारण में	उत्पादन में	विविधता में	आय में
द्वितीय स्थान	द्वितीय स्थान	प्रथम स्थान	पाँचवा स्थान

(57 प्रकार के खनिज) 81 प्रकार के

राजस्थान में 81 प्रकार के खनिज पाए जाते हैं आइए जानते हैं वह कौन - कौन से खनिज यहाँ पाए जाते हैं।

1. ऐसे खनिज जिन पर राजस्थान का एकाधिकार है -
   पन्ना, जास्पर, तामड़ा, वोलेस्टोनाइट

प्रश्न - 2. निम्नलिखित में से कौनसे खनिजों का राजस्थान लगभग अकेला उत्पादक राज्य है?

A. सीसा एवं जस्ता अयस्क

B. ताम्र अयस्क

C. वोलेस्टोनाइट

D. सेलेनाइट

a. A, एवं C **b. A, B एवं D**

c. A, B एवं C **d. A, B, C एवं** **उत्तर - d**

2. ऐसे खनिज जिनके उत्पादन में राजस्थान का प्रथम स्थान है -
   जस्ता-97%, फ्लोराइड 96%, **एस्बेस्टस** 96%, रॉकफोस्फेट 95%, जिप्सम 94 % चूना पत्थर 98%, खड़िया मिट्टी 92%, घीया पत्थर 90%, चांदी 80%, मकराना
   (मार्बल) 75%, सीसा 75%, **फेल्सपार** 75%, टंगस्टन 75%, कैल्साइट 70%, फायर क्ले 65%, ईमारती पत्थर 60%, बेंटोनाइट 60%, कैडमियम 60%
3. वे खनिज जिनकी राजस्थान में कमी है - लोहा, कोयला, मैंगनीज, खनिज तेल, ग्रेफाइट

राजस्थान में पाए जाने वाले खनिजों को तीन प्रकारों में बांटा जा सकता है -

1. **धात्विक खनिज** - लौह अयस्क, मैंगनीज, टंगस्टन, सीसा, जस्ता, तांबा, चांदी इत्यादि।
2. **अधात्विक खनिज** - अभ्रक, एस्बेस्टस, फेल्सपार, बालुका मिट्टी, चूना पत्थर, पन्ना, तामड़ा इत्यादि।
3. **ईंधन** - कोयला, पेट्रोलियम, खनिज इत्यादि।

खनिजों की दृष्टि से राजस्थान में अरावली प्रदेश और पठारी प्रदेश काफी समृद्ध है।

धात्विक खनिज -

राजस्थान में धात्विक खनिज

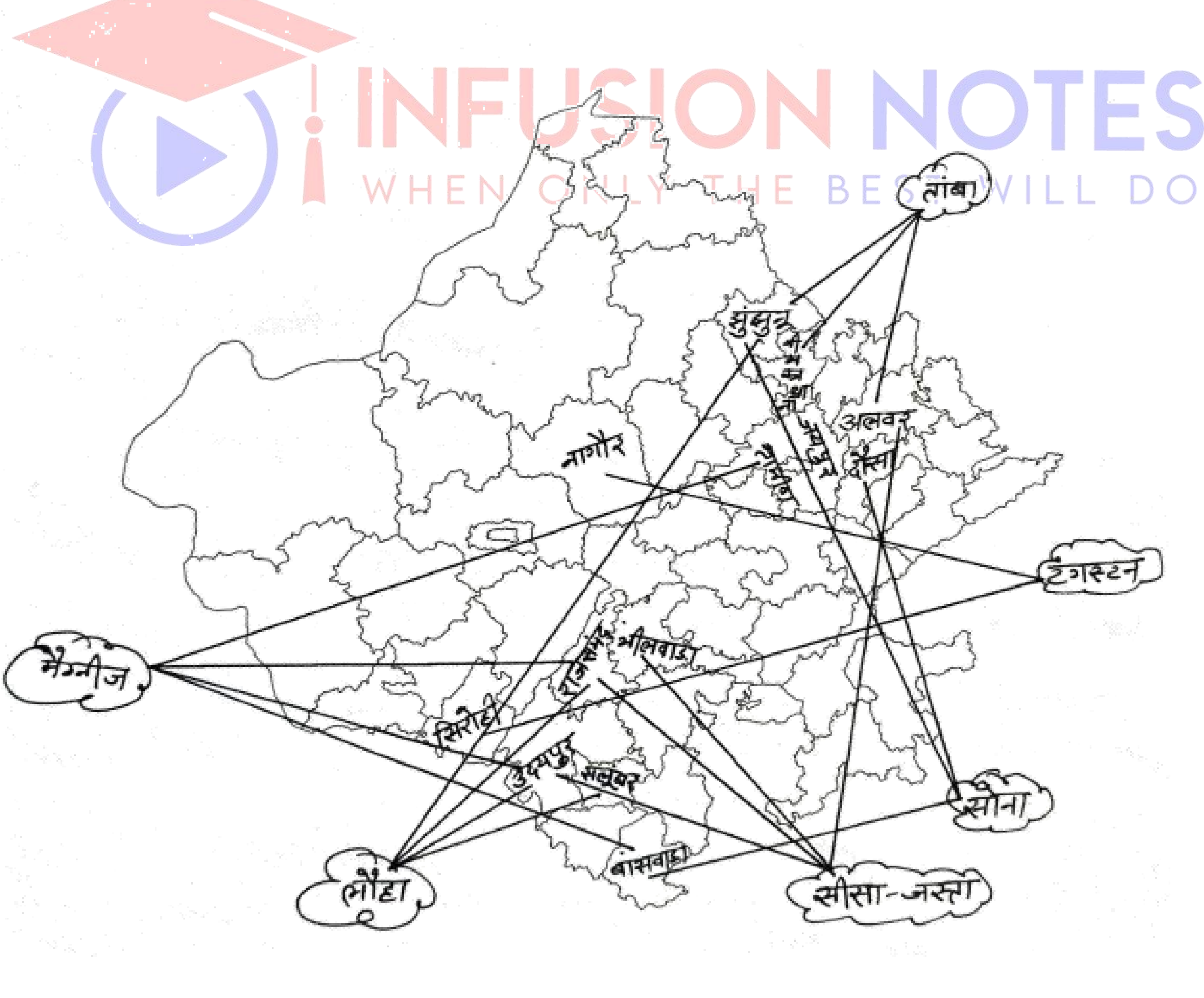

राजस्थान में अधात्विक खनिज

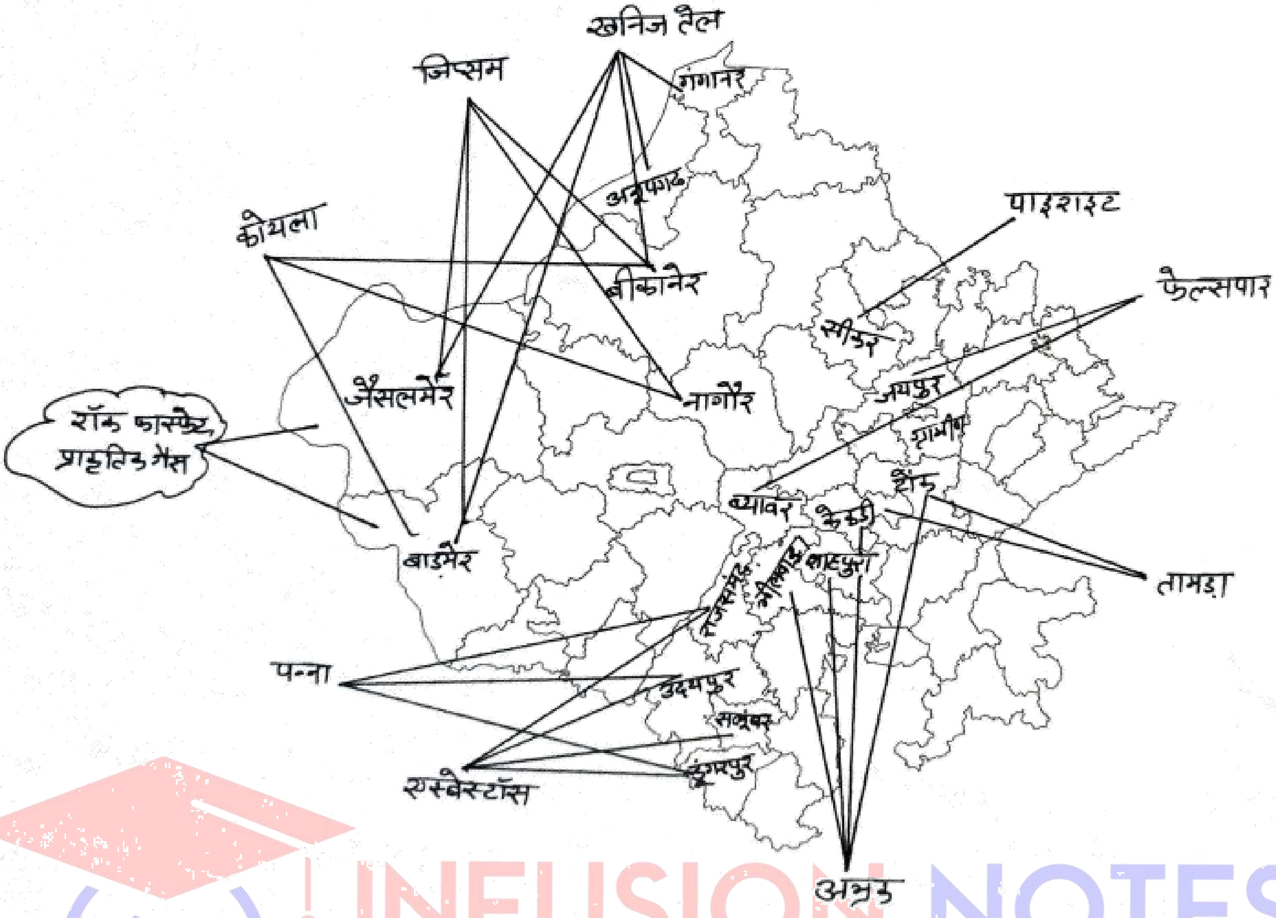

प्रमुख क्षेत्र

- गोठ-मांगलोद- नागौर (सर्वाधिक)
- भद्‌वासी- नागौर
- बिसरासर- राज्य की सबसे बड़ी खान - बीकानेर
- जामसर - राज्य का सबसे बड़ा जमाव - बीकानेर

चूना-पत्थर

यह मुख्य रूप से अवसादी चट्टानों में पाया जाता है।

चूना पत्थर की खानों में अगर 45 % से अधिक मैग्नीशियम हो तो उसे'डोलोमाइट' कहा जाता है।

स्टील ग्रेड चूना पत्थर - जैसलमेर के सानू क्षेत्र में।

सीमेंट ग्रेड - चित्तौड़गढ़

कैमिकल ग्रेड चूना पत्थर - जोधपुर व नागौर

नोट:- गोटन (नागौर) में भी चूना पत्थर पाया जाता है।

2. अभ्रक

- अभ्रक आग्नेय एवं कायांतरित चट्टानों में काले रंग के टुकड़ों के रूप में पाया जाता है।
- इसका उपयोग विद्युत उद्योगों में, सजावटी सामानों में एवं ताप भट्टियों में किया जाता है।
- यह ताप का कुचालक होता है।

- **माइकेनाइट उद्योग** - अभ्रक के चूरे से ईंट तथा चादरें बनाने वाले उद्योग को माइकेनाइट उद्योग कहा जाता है।
- इस उद्योग के सर्वाधिक कारखानें भीलवाड़ा जिले में पाये जाते है।
- अभ्रक को खनिजों का बीमार बच्चा कहा जाता है, क्योंकि देश की 20 बड़ी अभ्रक की खानों से कुल उत्पादन का मात्र 50% प्राप्त होता है

रूबी अभ्रक- सफेद अभ्रक को रूबी अभ्रक कहा जाता है।

बायोटाइट अभ्रक- गुलाबी अभ्रक को बायोटाइट अभ्रक कहा जाता है।

इसका उपयोग दवाईयाँ, सजावटी सामान, वायुयान एवं ताप भट्टियों में किया जाता है।

प्रमुख क्षेत्र

1. भीलवाड़ा - पोटला, फुलिया, नट की खेड़ी।
2. शाहपुरा

अभ्रक का सर्वाधिक उत्पादन भीलवाड़ा में होता है।

3. अजमेर- जालिया, भिनाय
4. ब्यावर
5. उदयपुर
6. जयपुर – बंजारी खान

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान अभ्रक का उत्पादन की दृष्टि से दूसरा स्थान है।

प्रश्न – 2. निम्न में कौन सा सही सुमेलित है?

A. **मांडो की पाल - फेल्सपार**
B. **तलवाड़ा - सीसा एवं जस्ता**
C. **खेरवाड़ा - एस्बेस्टस**
D. **ऋषभदेव – अभ्रक**

a) B b) D
c) A d) C उत्तर - D

3. रॉक फास्फेट

- जिन चट्टानों में डाई कैल्सियम फास्फेट का प्रतिशत अधिक पाया जाता है उन्हें रॉक फास्फेट चट्टान कहा जाता है।
- इसका उपयोग रासायनिक खाद के उत्पादन में अत्यधिक किया जाता है।

क्षेत्र

1. **झामरकोटड़ा (उदयपुर)-देश की सबसे बडी रॉक फास्फेट खान**
2. इसके अलावा उदयपुर के माटोन, कानपुरा, नीमच आदि से भी इनका उत्पादन होता है।
3. जैसलमेर- लाठी, बिरमानिया क्षेत्र, फतेहगढ़
4. जयपुर ग्रामीण - अचरोल
5. सीकर - करपुरा

2. एस्बेस्टॉस (90%) (मिनरलसिल्क)

उपयोग- सीमेंट, चादर, रेल के डिब्बे, जहाज, टाइल्स।

एस्बेस्टॉस के दो प्रकार होते है -

1. क्राइसोलाइट
2. एम्फीबोलाइट

एम्फीबॉल - यह घटिया किस्म का एस्बेस्टॉस राजस्थान में पाया जाता है।

प्रमुख क्षेत्र :

1. उदयपुर - खेरवाड़ा, ऋषभदेव
2. सलूम्बर
3. राजसमन्द- तिरवी
4. डूंगरपुर- देवल, खेमारू, नलवा
5. भीलवाड़ा
6. पाली

5. फेलस्पार

यह एक ऐसा खनिज है, जो स्वतंत्र रूप से प्राप्त नहीं होता है। इसके साथ पोटाश व सोड़ास्पर पाया जाता है।

प्रमुख क्षेत्र

1. अजमेर → मकरेडा→ सर्वाधिक फेल्सपार → 96%
2. भीलवाडा→माण्डल व आसींद
3. पाली→चनोदिया
4. खैरथल→ खैरथल-तिजारा

उपयोग→चीनी मिट्टी के बर्तनों में उपयोग।

काँच बालूका

उत्तर प्रदेश के बाद राजस्थान का दूसरा स्थान है।

प्रमुख क्षेत्र

1. जयपुर ग्रामीण → झर, कानोता, बासखों (सबसे अधिक उत्पादन)
2. बूंदी → बड़ोदिया

चीनी मिट्टी

इसका उपयोग रबर उद्योग, पेन्ट्स, सीमेंट आदि में किया जाता है।

उत्पादन क्षेत्र

1. सवाई माधोपुर → बसुव, रायसीना, चौथ का बरवाड़ा (सबसे अधिक चीनी मिट्टी)
2. सीकर→गोवर्द्धनपुरा, टोरडा, बूचरा

नोट :- चीनी मिट्टी का उचित उपयोग करने के लिए इस की धुलाई अनिवार्य है।

इसकी धुलाई का कारखाना नीम का थाना जिले में स्थापित किया गया है।

डोलोमाइट

पाउडर एवं चूना बनाने में उपयोग किया जाता है।

राजस्थान में सबसे अधिक उत्पादन कोटपूतली-बहरोड़, जयपुर ग्रामीण जिले में, अलवर, सीकर में होता है।

नोट :- हाल ही में राजसमंद जिले के मटकेश्वर क्षेत्र में डोलोमाइट के भण्डारों का पता चला है।

वोलेस्टोनाइट (100%)

उपयोग- रंग रोगन, कागज उद्योग, रासायनिक उद्योग ।

राजस्थान में सर्वाधिक उत्पादन सिरोही जिले में होता है।

प्रमुख क्षेत्र

1. सिरोही→खिल्ला, बैटका, बेल का मगरा
2. उदयपुर→बडाऊ परला खेड़ा, सायरा
3. डूंगरपुर
4. अजमेर
5. ब्यावर

यूरेनियम

उपयोग– परमाणु विखण्डन में

यूरेनियम का सर्वाधिक उत्पादन उदयपुर जिले से होता है। इसके अलावा भीलवाड़ा, सीकर व टोंक जिले से इसका उत्पादन होता है।

यूरेनियम

- उमरा - उदयपुर
- खंडेला पहाड़ी तथा रोहिला क्षेत्र - सीकर

Note - हाल ही में राजस्थान में रोहिल गांव, खंडेला तहसील जिला - सीकर में लगभग 1.2 करोड़ टन यूरेनियम के भंडार मिले हैं।

अध्याय –18

विभिन्न आर्थिक योजनायें, कार्यक्रम एवं विकास की संस्थाएं

राजस्थान में पंचायती राज व्यवस्था

पंचायती राज विभाग

- राजस्थान देश में, पंचायती राज की त्रिस्तरीय व्यवस्था को लागू करने में अग्रणी राज्य रहा है, जहाँ देश में पंचायती राज व्यवस्था का प्रादुर्भाव नागौर जिले से 2 अक्टूबर, 1959 को देश के तत्कालीन प्रधान मंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू द्वारा किया गया था।
- ग्राम पंचायतों को स्वायत्त इकाई के रूप में स्थापित करने हेतु पर्याप्त शक्तियां एवं अधिकार प्रदान
- संविधान के अनुच्छेद-243 (जी) में पंचायतों की शक्तियाँ, अधिकार और जिम्मेदारियों के महत्वपूर्ण मुद्दे समाहित हैं।
- 73वें संविधान संशोधन के अनुक्रम में राजस्थान पंचायती राज अधिनियम, 1994 अधिसूचित किया गया तथा राजस्थान पंचायती राज नियम, 1996 में लागू किए गए।

पंचायती राज की त्रिस्तरीय व्यवस्था है-

ग्राम पंचायत- ग्राम पंचायत प्रथम स्तर पर निर्वाचित निकाय है और लोकतंत्र की बुनियादी इकाई है, जो विशिष्ट उत्तरदायित्वों के साथ स्थानीय सरकार है।

पंचायत समिति - पंचायत समिति एक स्थानीय निकाय है। यह ग्राम पंचायत एवं जिला परिषद के बीच की कड़ी है।

जिला परिषद - जिला परिषद, ग्रामीण आबादी के लिए आवश्यक सेवाएं एवं सुविधाएं प्रदान करने के लिए जिला स्तर पर एक स्थानीय निकाय है।

पंचायती राज विभाग / संस्थाओं के मूल कार्य हैं:-

- पंचायती राज संस्थाओं में 73वें संवैधानिक संशोधन की मूल भावना के अनुसार विकेन्द्रीकरण की व्यवस्था को सुनिश्चित करना।
- पेसा (PESA) नियमों का प्रभावी क्रियान्वयन ।
- पंचायती राज संस्थानों में कार्मिकों की भर्ती सहित सभी प्रशासनिक / संस्थापन कार्य।
- पंचायती राज संस्थाओं में संगठन क्षमता का निर्माण, निर्वाचित प्रतिनिधियों की व्यावसायिक क्षमता, विशेषतः निर्वाचित महिला जन-प्रतिनिधियों एवं कार्मिकों की क्षमता का संवर्द्धन करना ताकि वे अपने भूमिकाओं का प्रभावी रूप से निर्वहन कर सकें।
- पंचायती राज संस्थाओं के माध्यम से क्षेत्रीय पिछड़ेपन को कम करना।

पंचायती राज में संचालित योजनाएं केन्द्रीय वित्त आयोग

- केन्द्र की पंचवर्षीय योजना, अनुदान राशि 100 प्रतिशत केन्द्र सरकार द्वारा उपलब्ध। वर्तमान में पंद्रहवा वित्त आयोग अस्तित्व में, जिसकी पंचाट अवधि 2020-21 से 2024-25 है।
- पंचायती राज संस्थाओं के मध्य राशि के वितरण के अनुपात 5: 20 : 75 (जिला परिषद : पंचायत समिति : ग्राम पंचायत) है।
- अनुदान का 40 प्रतिशत मूल अनुदान और शेष 60 प्रतिशत बन्ध अनुदान के रूप में होगा।
- मूल अनुदान राशि का उपयोग वेतन या अन्य स्थापना व्यय को छोड़कर स्थानीय निकायों (पंचायती राज संस्थाओं) की स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये किया जा सकेगा। यथा स्ट्रीट लाईट एवं प्रकाश व्यवस्था एवं अन्य सार्वजिनक भवनों / परिसम्पतियों जैसे- प्राथमिक/उच्च प्राथमिक विद्यालय, स्वास्थ्य उप केन्द्र, सहकारी बीज एवं उर्वरक भण्डार केन्द्र, सड़कों एवं फुटपाथों, पार्को, खेल मैदानों तथा कब्रिस्तान एवं शमशान स्थलों की मरम्मत एवं रखरखाव ।
- बंध अनुदान अन्तर्गत राशि का आवंटन दो किश्तों में किया जाएगा। 50 प्रतिशत स्वच्छता एवं 50 प्रतिशत पेयजल आपूर्ति, जल संचयन और जल पुनर्चक्रण हेतु ।

पंचायती राज में संचालित योजनाएं राज्य वित्त आयोग

- राज्य की पंचवर्षीय योजना, अनुदान राशि राज्य सरकार द्वारा उपलब्ध ।
- वर्तमान में राज्य वित्त आयोग - षष्टम अस्तित्व में, जिसकी पंचाट अवधि 2020-21 से 2024-25 है।
- पंचायती राज संस्थाओं के मध्य राशि के वितरण के अनुपात 5: 20: 75 (जिला परिषद : पंचायत समिति : ग्राम पंचायत) है।
- योजना में 55 प्रतिशत राशि मूलभूत एवं विकास कार्यों के लिए, 40 प्रतिशत राशि राष्ट्रीय और राज्य प्राथमिकता योजनाओं के लिए एवं 5 प्रतिशत राशि निष्पादन के लिए प्रोत्साहन अनुदान के रूप में उपयोग किया जायेगा।

राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान (RGSA)

- राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान (RGSA) वर्ष 2018-19 से क्रियान्वित किया जा रहा है। इस योजना के तहत केन्द्र एवं राज्य का हिस्सा राशि 60:40 के अनुपात में है।
- राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान योजना का मुख्य उद्देश्य पंचायती राज संस्थाओ के निर्वाचित जन प्रतिनिधियों एवं अधिकारियों एवं कर्मचारियो की क्षमता संवर्द्धन करना है।

ग्रामीण विकास विभाग

- देश के चहुंमुखी विकास के लिये ग्रामीण क्षेत्र का विकास के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुये अति पिछड़े तथा गरीबी से ग्रस्त परिवारों को सीधे लाभ पहुँचाने हेतु वर्ष 1971 में विशिष्ट योजना संगठन की स्थापना की गई।
- वर्ष 1979 में इसका कार्य क्षेत्र बढ़ाकर इसे "विशिष्ट योजनाऐं एवं एकीकृत ग्रामीण विकास विभाग का नाम दिया गया।
- 1 अप्रेल, 1999 से इस विभाग का नाम "ग्रामीण विकास विभाग" किया गया। ग्रामीण क्षेत्रों का सर्वांगीण विकास करने के उद्देश्य से अनेक कार्यक्रमों की शुरुआत कर उन्हें और अधिक प्रभावशील बनाने तथा विकास की प्रक्रिया में जन भागीदारी बढ़ाने हेतु प्रयास किये गये हैं।

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न , 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न , 150 में से)

UP Police Constable 2024 - http://surl.li/rbfyn (98 प्रश्न , 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6UR0

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD – 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये
RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)

SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (Ist Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (Ist शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)
UP Police Constable	17 February 2024 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

Our Selected Students

Approx. 137+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	114195120370022	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
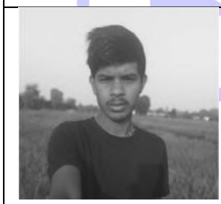	**Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati**	SSC CHSL tier-1	2006018079	Teh.- Biramganj, Dis.- Raisen, MP
N.A	**Mahender Singh**	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumangarh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumangarh
N.A	**Mangilal Siyag**	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	MONU S/O KAMTA PRASAD	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
	Govinda Jangir	RAS	1231450	Hanumangarh
N.A	**Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma**	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawala
N.A	**LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL**	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR
N.A	**Ramchandra Pediwal**	RAS	N.A.	diegana , Nagaur

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village-gudaram singh, teshil-sojat
N.A	**OM PARKSH**	RAS	N.A.	Teshil-mundwa Dis- Nagaur
N.A	**Sikha Yadav**	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
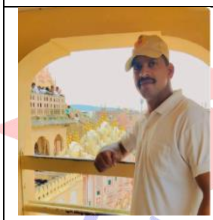	**Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel**	Rac batalian	729141135	Dis.-Bhilwara
N.A	**mukesh kumar bairwa s/o ram avtar**	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUNU
N.A	**Rinku**	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	**Rupnarayan Gurjar**	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Jagdish Jogi	EO/RO (84 Marks)	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota
	Sanjay	Haryana PCS	96379 Admit Card HARYANA PUBLIC SERVICE COMMISSION	Jind (Haryana)

And many others……

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp करें – https://wa.link/lrn74q

Online order करें – [***http://surl.li/rbhbb***](http://surl.li/rbhbb)

Call करें - 9887809083